ओ३म्

दलितोद्धार

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्॥

लेखक—

श्री चांदकरण शारदा,

बी० ए० एल-एल० बी० अजमेर.

प्रधान आर्य स्वराज्य सभा, लाहौर.

रचयिता—

"कौंसिल एन्ट्री" "असहयोग" "माडरेटों की पोल"
"शुद्धि" तथा "हिन्दू संगठन" इत्यादि।

बा० मथुराप्रसाद शिवहरे, प्रबन्धकर्ता के प्रबन्ध से,
वैदिक-यन्त्रालय, अजमेर में मुद्रित.

12627

दलितोद्धार पर
कुंवर चांदकरण शारदा
का
भाषण

विमल इन्दु की विशाल किरणें,
प्रकाश तेरा दिखा रही हैं ।
अनादि तेरी अनन्त माया,
जगत् को लीला दिखा रही हैं ॥

मूल्य चार आना

समर्पण

आज ऋषि की जन्मशताब्दी के दिवस मेरा हृदय खुशी से उछल रहा है। महर्षि के सिद्धान्त सारे संसार में फैल रहे हैं। संसार के अटल सिद्धान्त "सत्यमेव जयते नानृतम्" के अनुसार ऋषि के सिद्धान्तों की विजयदुन्दुभि प्रत्यक देश में बज रही है। आज चारों ओर खुशी के नजारे दृष्टिगोचर हो रहे हैं। एक ओर गाज़ी मुस्तफा कमालपाशा तथा टर्की के मुसलमानों का अन्धश्रद्धावाली कुरान से विश्वास उठता जारहा है। मिश्र, टर्की और अरब के पढ़े लिखे मुसलमान पुराने मौलवियों, मुल्लाओं तथा उनकी हदीशों और कुरान को तिलाञ्जलि देकर वैदिक वैज्ञानिक सिद्धान्तों की ओर झुक रहे हैं। तुर्कों ने परदे का रिशाज बंद कर डाढ़ी मुंडवाना शुरू कर दिया है। इसलामी सभ्यता में वह भारी तबदीली आरही है, जो महर्षि और धर्मवीर लेखरामजी लाना चाहते थे। बाइबल को मानने वाले यूरोप और अमेरिका के ईसाई भी युक्तियुक्त वेदादि सत्यशास्त्रों का जय जयकार बोलते जारहे हैं। यूरोप के वैज्ञानिक वैदिक सिद्धान्तों के अधिक नि-

कट पहुंच गये हैं। जर्मनी के संस्कृतज्ञ उपनिषदों पर मुग्ध हैं। इंगलैण्ड के प्रोफेसर मेक्समुलार ने संस्कृत साहित्य का अनुशालन कर उनकी आखें खोल दी हैं। श्री स्वामी विवेकानन्दजी, स्वामी रामतीर्थजी, डाक्टर रवीन्द्रनाथजी टगोर और डा० केशवदेवजी शास्त्री के वैदिक महिमा पर व्याख्यान सुनकर अमेरिका मुग्ध होगया है। इंगलैण्ड के यूनीटेरीयन चर्च ने ईसाइयों में से अन्धश्रद्धा का नाश कर दिया है। बुद्धिवाद की सर्वत्र विजय हो रही है। बाईबल और कुरान का खंडन जिन मूल आधारों पर महर्षि दयानन्दजी ने अपनी सत्यार्थप्रकाश में किया था उसको सारा सभ्य संसार मानने लगा है। आधुनिक विज्ञान ने सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में बाईबल और कुरान को झूठा साबित कर दिया है। यूरोप वाले अब इस बात को नहीं मानते कि संसार छः दिन में रचा गया। खुदा ने इब्राहिम से बातें कीं और अपनी उंगलियों से उनके धर्म के दस (१०) सिद्धान्त लिखे। वे कहते हैं कि हम इस बात को नहीं मान सकते कि इलिजा अपना मनुष्य-शरीर लेकर आसमानी स्वर्ग में गई। क्योंकि छः मील से ऊपर उड़ते ही मनुष्य शरीर बर्फ के समान ठंडा पड़ जाता है और प्राण पखेरू उड़ जाते हैं। वे यह भी नहीं मानते कि मृतक-मनुष्य की हड्डियां कबर से उठीं और आपस में बातें करने लगीं और न वे इसी बात को मानते हैं कि एक सेव के खाने पर आदम और हव्वा को

खुदा ने शाप दे दिया और उनके कसूर से सारे संसार को दुःख भोगना पड़ा और ईसा के सूली पर चढ़ने से सारे संसार के दुःख मिट गये। यूरोप के गिरजाघर और पादरी अब मृत्यु-शय्या पर सोरहे हैं। कोपरनीकस और गेलीलिओ आदि न तथा कई वैज्ञानिकों ने दुःख भोगकर दूसरे वैज्ञानिकों के लिये रास्ता खोल दिया है। अब युक्तियुक्त वैदिक सिद्धान्तों द्वारा ईसाई मत का यूरोप में भली प्रकार खंडन हो रहा है। अब तो यूरोप वालों का डारविन के सिद्धान्तों से भी मतभेद होगया है। अनुभव से यूरोप का विज्ञान बदल रहा है। धीरे २ वेदों के सत्य अटल मार्ग पर संसार बढ़ रहा है। लंडन की यूनीवर्सिटी के प्रोफेसर Wood Jones, थियासाफिस्टों की प्रधाना डाक्टर एनीबिसेन्ट, मेडम ब्लेवेटस्की, डीसगाड्लें आदि सब बड़े २ यूरोप के विद्वान् कहने लगे हैं कि डारविन का यह सिद्धान्त मिथ्या है कि मनुष्य की उत्पत्ति बन्दरों से हुई। आर्य्यसमाज जिन तीन सिद्धान्तों को जगत् की "उत्पत्ति" "स्थिति" और "प्रलय" को मानता है उन्हीं को हरबर्ट स्पेनसर आदि विद्वान् उत्पत्ति (Evolution), स्थिति (Equilibration) और प्रलय (Restriction) के नाम से मानने लगा है। समझदार सनातनी भी एक ही ईश्वर के तीन नाम "ब्रह्मा" "विष्णु" "महेश" इसी जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के द्योतक बतलाते हैं। वैदिक सिद्धान्त

एक मूल प्रकृति और उसके पाँच तत्वों को अब जर्मनी के वैज्ञानिक मानने लगे हैं। उन्होंने अपनी अन्वेषणाओं से "पारे" का "सोना" बनाकर यह सिद्ध कर दिया है कि तत्त्व के विषय में वैदिक सिद्धान्त सत्य हैं। वैदिक धर्मशास्त्रों के अनुसार ईश्वर कर्मानुसार जीवों को फल प्रदान करता है और मनुष्य कर्मानुसार ही नीच या उच्च योनि को प्राप्त होता है। इस अटल वैदिक सत्य को यूरोप के कर्मसिद्धान्त के पंडित मानने लगगये हैं और वे मुसलमान, ईसाइयों की इस बात को नहीं मानते कि "क़यामत की रात" तक मुर्दे कबरों में सड़ते रहेंगे और जन्म नहीं लेंगे। इसी वैदिक सिद्धान्त के प्रचार से पश्चिम में अब मुर्दों का कबरों में गड़ना बन्द होरहा है। और वहां मुर्दों को जलाकर मृतक संस्कार करने की प्रथा अड़रही है। सभी डाक्टर गाड़ने की प्रथा को वैज्ञानिक रीति से मनुष्यजाति के लिये हानिकारक बता रहे हैं और जंगली लोगों के इस विश्वास की कि "क़यामत की रात को मुर्दे उसी शक्ल में कबरों में से उठकर निकलेंगे" अब हँसी उड़ाई जाती है। यूरोप, अमेरिका में अब इतने अधिक दाहकर्मसंस्कार होते हैं कि जर्मनी में बीस और युनाइटेड स्टेट्स अमेरिका में चालीस दाहकर्म संस्कार करने की श्मशानभूमियां बन चुकी हैं। अकेले इंग्लिस्तान में एक वर्ष में एक हजार से अधिक मृतकों का दाहकर्मसंस्कार होता है। मुनिवर गुरुदत्तजी

के वैदिक मंत्रों के वैज्ञानिक अर्थ साइंस वालों की आंखों को चकाचैंध कर रहे हैं और यूरोप के समझदार आदमी वैदिक सत्य को मानने लगे हैं। इसी से मैं कहता हूं कि आज जन्म-शताब्दी के दिवस महर्षि की सच्ची जय बोलो। भारत में महर्षि की जय प्रत्येक सुधारक दल में हो रही है। शिक्षा के महकमे में आर्य्यसमाज का और उसके द्वारा खोले हुए गुरुकुल और स्कूलों का इतना अधिक प्रभाव पड़ा है कि लार्ड मैकोले और राजा राममोहनराय का शिक्षाविभाग द्वारा पश्चिमी सभ्यता फैलाने का बेड़ा गर्क होगया। अब प्रत्येक विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी न रखने की चर्चा हो चली है बल्कि कार्य्यरूप में देशी भाषाओं को प्रत्येक युनिवर्सिटी स्थान देने लगी है। महर्षि दयानन्द द्वारा सत्यार्थप्रकाश के छठे सम्मुल्लास में लिखे राजधर्म की महिमा अब लोगों पर प्रकट हुई हैं और आर्य्य स्वराज्यसभायें सफलीभूत हो रही हैं। हिन्दीभाषा का प्रचार जो महर्षि को हृदय से प्यारा था वह दिन २ बढ़ रहा है। भारतीय इतिहास भारतीयों द्वारा ही लिखे जा रहे हैं। यूरोपीय इतिहासकारों की अतिरंजीत कहानियों से भारतीय विद्यार्थियों का विश्वास उठ गया है। एक भाषा, एक भाव, एक भेष, एक राष्ट्रीयता, आर्य्य स्वराज्य और आर्य्य-संगठन की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट होगया है। छूआ-छूत का भूत भाग रहा है। महर्षि दयानन्दजी द्वारा बतलाये

हुये "शुद्धि" "दलितोद्धार" और सेवाधर्म के सिद्धान्तों को भारतीय जनता एक स्वर से मानने लगी है। जन्म से जाति का सिद्धान्त ढीला पड़ गया है और कर्मों को प्रधान मानकर वर्णाश्रममर्यादा पुनः स्थापित हो रही है। स्त्री और शूद्र न पढ़ाये जायें इस बात को सुनकर हमारे सनातनी भाई भी लाल पीले होने लगे हैं। बालविवाह केवल जातीय कान्फ्रेन्सों द्वारा ही बन्द नहीं हुआ है बल्कि बड़े लाट की काऊन्सिल तक में बालविवाह और वृद्धविवाह रोकने के कानून के मसविदे पेश किये गये हैं। वायसराय की काऊन्सिल ने "एज आफ कनसेन्ट" Age of consent बढ़ाई है। न केवल अमेरिका में शराबखोरी कतई बन्द हुई है बल्कि भारत में भी इस नशे को बंद करने का पूर्ण तौर से लाट साहब की व्यवस्थापक सभा में यत्न किया गया है, महर्षि का यह वैदिक आदर्श कि "मेरे राज्य में कोई चोर कंजूस, शराबी, मूर्ख, रंडीबाज और अग्निहोत्र न करने वाला न रहे"—

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥

सारे संसार के मन भारहा है। सत्यार्थप्रकाश का अनुवाद बहुतसी देशी भाषाओं में होगया है। ऋषि के मिशन की धूम आफ्रीका जैसे दूर देशों में होरही है। काले से काले और गोरे से गोरे अंग्रेज सार्वभौम वैदिक धर्म के झण्डे के नीचे

आरहे हैं। मद्रास और आसाम में दलित जातियां आर्य्यसमाज द्वारा ही विधर्मी होने से बचाई जारही हैं। दुःखी मज़दूर-दल, विधवाएं, अनाथ और अस्पृश्य भाई आर्य्यसमाज के झण्डे के नीचे आकर ही शान्ति पारहे हैं। तलाकों से दुःखित अमेरिका के धनिकों को यदि किसी धर्म में शान्ति मिल सकती है तो वैदिकधर्म ही है। प्रिय पुरुषो ! छोटे २ विघ्नों से साहस मत छोड़ो यद्यपि नौकरशाही ने कई स्थानों पर आर्यसमाज के नगरकीर्तन बंद कर आर्य्यसमाजियों के दिलों को चोट पहुँचाई है। परन्तु हमारा दृढ़ निश्चय है कि आर्य्यसमाज के मिशन को ऐसी विघ्नबाधाएं कुछ भी नुक्सान नहीं पहुँचा सकतीं। मुसलमानों की गुप्त सभायें असहिष्णुता और मारने काटने की धमकियां हमारे लिये पुष्पवर्षा हैं। हमारे शहीद वली होकर आर्य्यजाति में नवजीवन फूंकेंगे, वे मरेंगे नहीं, बल्कि अमर रह कर हिन्दूजाति को ज़िन्दा करेंगे। आर्य्यसमाज की बढ़ती हुई आर्य्यसभ्यता के आगे कोई इसलामी या अनार्य्यसभ्यता नहीं ठहर सकती और एक दिन अवश्य आवेगा जब महर्षि दयानन्दजी के सत्य सिद्धान्त सारे संसार में कार्यरूप में फैलेंगे और स्वयं हमारे विरोधी भी आर्य्य बनकर नगर और ग्राम २ में वैदिक नाद बजावेंगे। प्रिय आर्य्यवीरो ! आज के शुभ दिवस आर्य्यसमाज के विजय पर आनन्द मनाओ और सच्चे कर्मवीर बनकर वैदिक धर्म की जय बोलो। महर्षि दयानन्द

ही हिन्दू-संगठन के सच्चे प्रवर्त्तक थे। वीर शिवाजी, महाराणा राजसिंह और गुरु गोविंदसिंह के बाद हिन्दूजाति में क्षात्र धर्म का प्रचार महर्षि ने ही किया। अतः महर्षि की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में मैंने हिन्दू-संगठन पुस्तक रचकर श्रीचरणों में भेंट की है।

हिन्दूसंगठन का "दलितोद्धार" मुख्य अंग है। अतः यह पुस्तक पृथक् छापी गई है। आशा है कि आर्य जनता इस पुस्तक को पढ़कर दलित भाइयों के संकटमोचन में अग्रसर होगी और कर्मवीर बनकर ऋषि की सच्ची जन्मशताब्दी मनावेगी। हमारी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दलितोद्धारक महर्षि कि विमल विभूति की रश्मियां भारत में अधिक नवजीवन संचार करें और मुर्दा दिलों में यावत् चन्द्रदिवाकरौ क्षात्रधर्म का प्रकाश करती रहें।

आर्य्यजाति का अति तुच्छ सेवक-
चांदकरण शारदा

भूमिका

कई हज़ार वर्ष के लम्बे समय से हिन्दू-जाति ने अपने एक बड़े अंग को अपने अधिकारों से च्युत कर रक्खा था, भारत की पराधीनता के ज़माने में मुसलमानों और ईसाइयों ने इसके इसी अंग को काट कर इस जाति को बलहीन बनाने की पूरी कोशिश जारी कर रक्खी है। इसलिये देश के और जाति के नेताओं का ध्यान इस तरफ़ पूर्णरूप से आकर्षित हुआ है यह शुभ लक्षण है।

बुतों का सितम रहनुमा होगया, कि रुख अपना सूए खुदा होगया।

यद्यपि अबसे ५० वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी ने हिन्दुओं की तमाम कमज़ोरियों पर काफ़ी रोशनी डाली थी, अछूतों के उद्धार की घोषणा की थी, जन्मगत अधिकारों की ठेकेदारी की निन्दा की थी और ईश्वरीय ज्ञान वेद का प्रत्येक मनुष्य को अधिकारी बताकर गुण कर्मानुसार प्रत्येक मनुष्य के अधिकारों और कार्यों पर ज़ोर दिया था, परन्तु उस समय लोगों ने उनकी गम्भीर आवाज़ को नहीं सुना। सुनते कहां से विद्या, तप, शौर्य आदि से प्राप्त होने वाले समाज के उत्तम अधिकार लोगों को जन्म से ही प्राप्त होगये, फिर विद्या पढ़ने, तप करने, शूरता और युद्धविद्या को प्राप्त करने आदि का परिश्रम लोग क्यों करें। "जिसे मिले यों, वह खेती करे क्यों" किसी जाति या समाज के लिये इससे बढ़कर दुर्भाग्य का विषय और कुछ नहीं होसकता। वर्तमानकाल में वही जाति जीने की अधिकारिणी है, जिसका प्रत्येक व्यक्ति सुशिक्षित, विद्वान्, बलवान्, धर्मात्मा, देश और जाति का शुभचिन्तक और अपने कर्तव्य कर्म को ईमानदारी से पूरा करनेवाला हो। ऊंच नीच, बड़ा छोटा, पवित्र और अपवित्र इस क़िस्म के भाव जाति के नाश के कारण होते हैं। समाज संगठन में यह बीमारी कभी पैदा नहीं होनी चाहिये।

किसी जाति के जितने व्यक्ति इन गुणों से खाली हैं, वह जाति उतने ही अंश में हीनबल है। गुलाम जातियों को तो यथाशक्य जल्द मुमकिन हो इन कमियों को शीघ्र से शीघ्र पूरी कर लेनी चाहिये अन्यथा उनका अस्तित्व पूर्ण खतरे में है।

हिन्दू जाति में अछूतों और दलितों का प्रश्न ऐसा ही है। खुशी की बात है कि उद्योग शुरू होगया है। जिन लोगों को इस विषय में कुछ शङ्का हो तथा अधिक जानकारी प्राप्त करना हो, वे हमारे परम प्रियमित्र श्रीयुत कुंवर चांदकरणजी साहब शारदा अजमेरनिवासी की यह दलितोद्धार नामक पुस्तक अवश्य पढ़ें। इस पुस्तक के अन्दर कुँवर साहब ने बहुत उत्तम २ ज़बरदस्त दलीलों, शास्त्रों, वेदों और पुष्ट ऐतिहासिक प्रमाणों से अपने विषय का प्रतिपादन किया है जिसके पढ़ने से कट्टर से कट्टर पक्षपातियों को भी उनकी बात स्वीकारनी पड़ेगी और जिस उद्देश्य से कुँवर साहब ने यह परिश्रम किया है उसमें सफलता प्राप्त होगी ऐसा हमारा विश्वास है।

कुंवर साहब ने देशसेवा के अनेक कार्य किये हैं, सेवा-समितियों का संगठन किया है, दलितोद्धार, शुद्धि और हिन्दू-संगठन में पूर्ण योग दिया है, आगरा कानपुर आदि स्थानों में तत्सम्बन्धी अनेक भाषण दिये हैं, असहयोग के समय भारी आमदनी की वकालत छोड़कर देशसेवा की ओर लोकहित के लिये कृष्णमन्दिर का निवास स्वीकार किया। ये बड़े धुन के पूरे, लगन के पक्के, पूर्ण उत्साही, देश और जाति के सच्चे शुभ-चिन्तक हैं, उनके कलम से निकली हुई यह पुस्तक पढ़कर आप खुश हों ऐसी हमारी आशा है।

श्री कल्याण औषधालय, अजमेर.
माघ शुक्ला ११ सं० १९८१ वि०

कल्याणसिंह वैद्य.

द्वितीय संस्करण की भूमिका

महर्षि दयानन्द की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में मैंने इस पुस्तक को छपवा कर वितीर्ण की थी तथा बेचा भी था। प्रथम संस्करण की एक हज़ार कापियां शताब्दी पर ही खतम होगई थीं और उस के बाद से मेरे पास इस की मांग बराबर आ रही है। अतः मैंने इसी पुस्तक को कुछ घटा बढ़ाकर तथा कई शुद्धियां कर २ इस का द्वितीय संस्करण जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया है। आशा है कि जनता इसे अपनावेगी।

शारदाभवन अजमेर
मार्गशीर्ष शु० ११
सं० १९८२

चाँदकरण शारदा,

॥ ओ३म् ॥

आर्य्यवीर की प्रतिज्ञा ।

मैं कर्मवीर बनि आर्य्यभूमि का भार उठाऊँगा ।

तेजस्वी बलवान् बनूँगा अर्जुन भीम समान ।
स्वामी दयानन्द लेखराम सम करूं आत्म-बलिदान ॥

देश का भक्त कहाऊँगा ॥

अग्निकुंड हो, दुखसमुद्र हो, व्याधा वर्ग विशाल ।
हटूँ नहीं पीछे फिर भी मैं हूँ भारत का लाल ॥

काल से भी भिड़ जाऊँगा ॥

मात तात निज भ्रात त्यागिहौं अरु त्यागौं जलपान ।
दृढ़ व्रत निज त्यागौं नहीं चाहे निकले तन सों प्रान ॥

सत्य ही मित्र बनाऊँगा ॥

देश देश अरु ग्राम ग्राम में करिहौं धर्म-प्रचार ।
बिछुड़े हुये निज भ्रातृगणों से मिलिहौं भुजा पसार ॥

अछूतों को अपनाऊँगा ॥

निर्भय होकर किया जिन्होंने अत्याचार महान् ।
देहुं मिटा मैं निज भारत से उनका नाम निशान ॥

किसी से भय क्यों खाऊँगा ॥

युद्धस्थल में आन करूं क्षण भर में प्रलय-समान ।
शत्रु-दलहिं इहि विधि हनूं जिमि काटत खेत किसान ॥

भयंकर युद्ध मचाऊँगा ॥

प्राण जायँ यदि धर्म कारणे पाऊँ आनन्द-धाम ।
विजय पाऊँ युद्धस्थल में रणजीत कहाऊँ नाम ॥

प्रकाश उत्तम पद पाऊँगा ॥

मैं कर्मवीर बनि आर्य्यभूमि का भार उठाऊँगा ।

ओ३म्

दलितोद्धार

प्रथम अध्याय

ओ३म् समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे ।
सह वो युनज्मि सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः ॥
ओ३म् सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥ (वेद)

गुण कर्म स्वभावानुसार जाति मानने से ही हिन्दू जाति का बेड़ा पार होगा ।

कहावत प्रसिद्ध है History repeats itself कि इतिहास अपने आप को दोहराता रहता है। जो दशा आजकल भारत की है वही दशा एक वार यूरोप की थी, वहां पर भी ऊंच नीच का भेद; पादरी, जमीदार और किसान का भेद उपस्थित था। परन्तु अत्याचारों की अधिकता के कारण प्राकृतिक नियमानुसार वहां धार्मिक विप्लव हुआ। समाज में संघर्ष

हुआ। प्रोटेस्टेंट रोमन कैथोलिकों के झगड़ों में लोगों की आंखें खोलदीं और नीचातिनीच को भी अपने अधिकार ज्ञात हो गये और यूरोप में उन्नति प्रारंभ हो गई। नई २ इजादें हुईं। नाना प्रकार के कल कारखाने खुले, मजदूर-संघ कायम हुये और स्वतन्त्रता, एकता और भ्रातृभाव के विचारों का प्रचार हुआ। भारत में भी हिन्दूसमाज में जब स्वार्थी पुजारियों, महन्तों और धर्म के ठेकेदारों का अत्याचार बढ़ा, लोगों पर छुआछूत का भूत सवार हुआ, जाति पांति के अत्याचार बढ़े और हिन्दू-जाति ईसाई और मुसलमानों का ग्रास बनने लगी तो आर्य्यसमाज के रूप में धार्मिक विप्लव प्रारंभ हुआ। और इसमें हिन्दूसगठन के प्रवर्त्तक, वेदों के रक्षक, महर्षि दयानन्द की विजय हुई। महर्षि दयानन्द ने वेदों का सूर्य्य चमकाकर सामाजिक क्रांति की, जिसके अनेक फलों में दलितोद्धार का आंदोलन भी है। भारत के प्रत्येक भाग में आर्य्यसमाज की वर्षों की तपस्यालता आज लहरा रही है।

आज ऋषिशताब्दी के महोत्सव पर दलितोद्धार का नाम लेते ही आर्यसमाज की ओर हमारी दृष्टि जाती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देखा कि हिन्दू-जाति मुसलमान, ईसाइयों से पदाक्रांत हो रही है और २२ करोड़ हिन्दुओं को मुट्ठीभर आदमी दबा रहे हैं। इसका कारण ढूंढ़ने उनको बहुत दूर नहीं जाना पड़ा, उन्होंने ब्राह्मणों का शूद्रों पर अत्याचार देखा। जो जाति परस्पर में ही न्याय का वर्ताव नहीं कर सकती वह

कदापि जीवित नहीं रह सकती। महर्षि ने देखा कि किस प्रकार उच्च जाति के हिन्दू नीच जाति के दर्शनमात्र से अपने को अशुद्ध मानते हैं। वे अपने ही धर्मभ्राताओं को छूना पाप समझते हैं। मैले से मैले कुचैले दुष्ट अपवित्र ब्राह्मण को अपने जन्म के कारण स्वच्छ, पवित्र और धर्मात्मा शूद्रों से उत्तम समझा जाता है। जब ब्राह्मणों का यहां तक अत्याचार बढ़ा कि जिस रास्ते से अन्त्यज निकल जावें वह रास्ता भी अपवित्र हो जावे। वेचारों शूद्रों के शब्द कान में पड़ना पाप समझा जाने लगा। वेचारे शूद्र वेद के शब्द सुन लेते थे तो कानों में शीशा भराया जाता था। अदालतों में पञ्चम जाति के अछूतों की गवाही हो तो २० सिपाही पहले एक के वाद एक सुनता फिर मजिस्ट्रेट के कान तक यह वात पहुंचाई जाती थी! तब तो ये हिन्दू शूद्र ईसाई और मुसलमान होने लगे। ऐसी दशा में वे विधर्मी न हों तो और हो ही क्या सकते थे? क्योंकि मुसलमान, ईसाई होते ही उनकी छूतछात मिट जाती है। ईसाई और मुसलमानों के भी हिन्दुओं के समान हजारों फिर्के हैं और वे परस्पर खूब लड़ते झगड़ते भी हैं। परन्तु उनमें एक वात अच्छी है कि गैर मुस्लिम या गैर ईसाई के मुकाविले में ये सब एक हो जाते हैं। हिन्दुओं में यह वात नहीं। उनमें प्रेम का अभाव है और इस प्रेम के अभाव का कारण पौराणिक जन्म से जाति पांति का मानना है। महर्षि दयानन्द ने देखा कि जन्म से जाति मानने से परस्पर न्याय और प्रेम का

व्यवहार नष्ट हो जाता है। इससे बड़े लोग छोटों के साथ अन्याय का व्यवहार करते हैं। इससे नीचकुल में उत्पन्न हुए मनुष्य को सर्वगुणसम्पन्न होने पर भी उच्च पद पाने का अवसर नहीं मिल सकता। ऐसे घोर अत्याचार और अन्याय के कारण ही हिन्दू पराजित होते रहे हैं। इस जन्म से जाति के अभिमान ने ही हिन्दुओं को पारस्परिक फूट से इतना निर्बल बना दिया है कि प्रत्येक मनुष्य उन पर लात मार रहा है, हँसी उड़ा रहा है और हिन्दूजाति को घृणा की दृष्टि से देखता है। इसी जन्म से जाति के अभिमान ने जब उच्च जातियों को ज़ालिम बना दिया तो उनको अत्याचार करने की इतनी आदत पड़ गई कि उन्होंने अपनी मा, बहिन और पुत्रियों और सब महिलाओं के अधिकार छीनकर उन पर अत्याचार करने लगे। महर्षि दयानन्द ने उनकी यह दुर्दशा देख कर उसके निवारण का एकमात्र उपाय यह बताया कि गुण, कर्म, स्वभावानुसार वर्ण मानो। प्राचीन समय में जाति पांति के बन्धन ऐसे कड़े नहीं थे जैसे अब हैं, विश्वामित्र क्षत्रिय से ब्राह्मण बने। महर्षि दयानन्द ने कहा कि धर्म किसी के बाप दादा की निजू जायदाद नहीं है, धर्म प्रत्येक मनुष्य की अपनी कमाई है।

प्रत्येक मनुष्य का हक़ है कि वह जितना धर्म चाहे कमावे, संसार के किसी भी व्यक्ति की सामर्थ्य नहीं है कि वह किसी मनुष्य के लिये धर्म का द्वार बन्द करदे, परमात्मा का द्वार सारी सृष्टि के लिये खुला है, और वह जाति, पांति व रङ्ग

रूप को बग़ैर विवेचना किये हुए सब का पालन पोषण करता है। भगवान् सूर्य का ताप भंगी से लेकर ब्राह्मण तक पहुंचता है। इन्द्र भगवान् की वर्षा रंक से लेकर राजा तक के महल और झोंपड़े में होती है। वायु देवता सब ग़रीब और अमीर को मधुर सुगन्धि देता है। इसी प्रकार भगवान् ने वेद की पवित्र वाणी सब प्राणियों के लिये दी है। मदुमशुमारी से स्पष्ट पता चल रहा है कि उपरोक्त सिद्धान्त के नहीं मानने के कारण हिन्दूजाति की संख्या लाखों से प्रतिवर्ष घट रही है। नई मनुष्यगणना से पता चलता है कि हिन्दुओं की संख्या प्रतिदिन घटती ही चली जाती है। सन् १९११ में हिन्दुओं की संख्या २१७५८६८९२ थी, परन्तु १९२१ में ८५२३०६ घट गये। जहां अन्य जातियां बढ़ रही हैं, वहां हिन्दुओं की संख्या घटती जाती है। इधर हिन्दू १ फ़ी सैकड़े घट रहे हैं। उधर मुसलमान ५ फ़ी सैकड़े बढ़ रहे हैं।

हिन्दुस्थान में ईसाई ४० लाख होगये। पंजाब में ३३२००० तीन लाख बत्तीस हज़ार अछूत ईसाई बनगये। सन् १८८१ से १९२१ तक चालीस वर्ष में ईसाइओं की संख्या निम्नप्रकार से प्रतिशतक वृद्धि को प्राप्त होरही है।

पंजाब	११३४.२	फ़ीसदी बने
बड़ौदा	४६२.५	,,
मध्यप्रांत	४८८.९	,,

संयुक्तप्रांत	३२६'२	,,
हैदराबाद	३६०'२	,,
ट्रावन्कोर	१३५'३	,,
आसाम	१७६२५, सन् १८८१ में आसाम में केवल	

७००० ईसाई थे परन्तु अब १३२००० हैं।

इसी हिसाब से पंजाब और बङ्गाल में मुसलमान हिन्दुओं से बहुत अधिक होगये हैं और वहां पर एक प्रकार से मुसलमानी राज्य ही स्थापित होने वाला है। विहार प्रान्त में भी हिन्दुओं की संख्या २८, ७६, ११८ है। उनमें से १ साल के भीतर १, ४५, २१२ मौत के मुख मेंगये। जिनमें १, ४५, २२३ बालक थे और उनकी अवस्था १२ महीने से कम थी। प्रत्येक प्रान्त में हिन्दुओं पर ही कराल काल का कोप अधिक रहा है। यही नहीं हिन्दुओं की जन्मसंख्या भी घट रही है और मृत्युसंख्या बढ़रही है। आयु भी हमारी घटती ही चली जारही है। वीरता की जगह कायरपने ने डेरा जमा रक्खा है और अन्य जातियों की दृष्टि में हमारी जाति एक नामर्द और निर्जीव जाति होरही है। क्या उपरोक्त अङ्क हमारी शोचनीय दशा की सूचना नहीं दे रहे हैं। क्या हमारा भविष्य अन्धकारमय नहीं दिखाई देता? यदि यही हाल रहा तो कुछ सहस्र वर्षों में हिन्दूजाति का नामोनिशान इस पृथ्वी से उठ जायगा। दलितोद्धार हिन्दू-संगठन का आवश्यक अङ्ग है। इसलिये दलितोद्धार का प्रश्न हिन्दू-जाति के जीवन मरण का

प्रश्न है। अब हम दलितोद्धार के विरोधियों को उनके ही अनुकूल पुस्तकों के प्रमाण देकर निश्शंक करना चाहते हैं। ताकि वे दलितोद्धार के कार्य में कर्मवीर होकर भाग लें। हमारे मारवाड़ी भाई सबसे अधिक दलितोद्धार का विरोध करते हैं। परन्तु और प्रमाणों से यदि वे न मानें तो कम से कम अपने स्वार्थ के लिये ही उन्हें दलितोद्धार में सम्मिलित होना चाहिये। क्योंकि आजकल दलित भाइयों में यह भाव फैलाया जारहा है कि मारवाड़ी तुम्हारे खून के चूसने वाले, तुम्हारी उन्नति के बाधक हैं। यदि मारवाड़ी नहीं चेतेंगे तो वही लोग उनको लूटेंगे। यदि मारवाड़ी दलितों के साथ सहानुभूति करेंगे तो येही शूद्र उनके घरों को लूटने से बचावेंगे और धर्म-मन्दिरों की रक्षा करेंगे। किसी कवि ने क्या ही अच्छा कहा है।

सभी भूमि गोपाल की वामें अटक कहा।
जिसके मन में अटक है वोही अटक रहा॥

दलितों को बिना मिलाये हिन्दू-जाति को अन्य जातियां हजम कर जायेंगी।

देखो जबतक चाँवल के साथ भूसी रहती है तो वह किसी को नहीं पचता। परन्तु बिना भूसी के चांवल को सब खूब जोश के साथ बड़े स्वाद से खा जाते हैं।

बिना भूसी का चांवल उग ही नहीं सकता इसी प्रकार यदि दलितों को अपने साथ न रक्खोगे तो निर्वंश होकर नाश को

प्राप्त हो जाओगे और ईसाई, मुसलमान तुम्हें हजम कर जावेंगे। हिन्दुओं की दशा पर एक कवि ने कहा है—

कहें क्या हिन्दुओं के दिन दिला कैसे गुजरते हैं।
मिसाले नीम बिस्मिल हैं न जीते हैं न मरते हैं॥

इस हिन्दूजाति रूपी रस्सी को दोनों तरफ़ से इस्लाम और ईसाइयत के दो चूहे कतर रहे हैं। कोमल चीज़ को हरएक हजम कर जाता है। सिंघाड़े के जबतक कांटे हैं या नारियल के जबतक दाढ़ी है तबतक उसे कोई चबा नहीं सकता। परन्तु ज्यों ही सिंघाड़े के कांटे और छिलके उतारे या नारियल की दाढ़ी उतारी उस समय बड़ी नजाकत के साथ हम उन्हें खाजाते हैं। यदि दलितों को आपने अलग हटा दिया तो हिन्दू-समाज को ईसाई, मुसलमान हजम कर जावेंगे। हिन्दू-समाज बलशाली इन्हीं दलितों से है। अतः उन्हें पृथक् मत रक्खो। यदि तुमने इन्हें हटा दिया तो तुम्हारी इज्जत कौन करेगा, तुम्हें सेठ साहब, बाबू साहब, माई बाप कहने वाले तो यही लोग हैं। यदि इन्हें नहीं संभाला तो तुम्हारी सारी प्रतिष्ठा और अभिमान चकनाचूर हो जायगा और आप जीवन-संग्राम में टिक नहीं सकते क्योंकि "कट रहे हों पांव जिनके क्या चलेंगे चाल पर"। हिन्दू इसी कारण पिटते हैं कि इन्होंने अछूतों को पृथक् कर रक्खा है। क्योंकि मुसलमानों में अधिकतर दंगा करनेवाले गुण्डे, कसाई, कुंजड़े,

भटियारे, इक्के, तांगे वाले होते हैं इनके मुकाबिले में हमारे दलित भाइयों को खड़ा करो तब विजय होगी। नहीं तो पिटते ही रहोगे। यदि सनातनी शास्त्र के अनुकूल इनको पैर भी मानलो तो भी इनकी रक्षा करना ही चाहिये। क्योंकि बिना पैर के मनुष्य पंगु बन जाता है और पगु को प्रत्येक मनुष्य मार कर भाग जाता है। जैसे शरीर से हम पैरों को पृथक् कर या छुआछूत कर हम जीवित नहीं रह सकते बल्कि चौके तक में हम पैरों सहित जाते हैं इसी प्रकार दलित भाइयों से छुआछूत नहीं करना चाहिये। और उनको चौके वगैरह में जाने का पूर्ण अधिकार है। हमारे दलित भाइयों में भी बड़े २ भक्त हुए हैं। जैसे सेनभक्त नाई थे, रैदासभक्त चमार थे, जिनकी चेली उदयपुर की महारानी मीरांबाई हुई। इसी वास्ते किसी ने कहा है।

जात पांत पूछे नहीं कोई, हर को भजे सो हर का होई।

मुसलमानों में भी हिन्दू-धर्म के बड़े २ भक्त हुये हैं, रहीम कृष्ण का इतना बड़ा उपासक था कि उसने अपनी मृत्यु का निम्नलिखित दृश्य खेंचा।

कदम की छांह हो, जमुना का तट हो।
अधर मुरली हो माथे पर मुकुट हो॥
खड़े हो आप इक ऐसी अदा से।
मुकुट झोके में हो मौजे हवा से।

मिले जलने को लकड़ी ब्रज के वन की ।
छिड़क दी जाय धूलि निज सदन की ॥
इस तरह होय बस अंजाम मेरा ।
आपका नाम हो और काम मेरा ॥

कबीरजी जुलाहे थे और मुसलमान से उन्हें हिन्दू बनाकर रामनाम की दीक्षा दीगई थी, यह बात आज से ५३० वर्ष की पुरानी है। अछूतोद्धार की इससे बढ़कर कौनसी मिसाल मिलेगी कि छुआछूत के सबसे अधिक मानने वाले वैष्णवों के आचार्य रामानन्दजी ने कबीरजी को शुद्ध कर रामनाम का जप कराया। स्वयं वल्लभाचार्यजी के पहिले २५२ वैष्णवों में चांडाल भी शिष्य बनाये गये थे उन्होंने तीन मुसलमान पठान (रसखान, गुलखान इत्यादि) को शुद्ध करके वल्लभकुल संप्रदाय में लिया। वैष्णवधर्म के आचार्य पठकोपजी महाराज भंगी थे क्योंकि उनके लिये लिखा है (विक्रीय शूर्पं विचचार योगी) अर्थात् सूप (छजले) को बेच कर वे विचरते थे। और वाल्मीकिजी महाराज स्वयं निपाद थे। वे डाकू से ऋषि बने। जाबालि ऋषि की माता को यह मालूम नहीं था कि उनके पिता कौन हैं तो भी जाबालि को बराबर गुरुकुल में उच्चवंश के साथ भर्ती किया गया। इससे, स्पष्ट है कि किसी जाति में उत्पन्न होने से किसी को पढ़ने की मनाई नहीं थी। यदि बौद्धों के इतिहास को देखें तो ज्ञात होगा कि दलित जातियों में

से बौद्ध और जैनों के बड़े २ आचार्य हुए हैं। स्वयं भगवान् रामचन्द्रजी व भरतजी ने निषाद से छाती मिलाई थी और शबरी भीलिनी के झूंठे बेर खाये थे। यज्ञों में "पाञ्चजन्य" शब्द आता है जिससे स्पष्ट है कि सब शूद्र और शूद्रों से पतित लोग यज्ञों में सम्मिलित होते थे। डाक्टर हाफकेन ने, जो प्लेग पर पुस्तक रची है, उसमें लिखा है कि प्लेग आदि बीमारियों के दूर करने के लिये जो यज्ञ प्राचीन हिन्दू किया करते थे वह यज्ञ सफल नहीं माना जाता था, जबतक नीच से नीच शूद्र तक उसमें सम्मिलित न हो। यजु: अ० ३० मं० ६५ में "तपसे शूद्रं" तपस्या के लिये शूद्र बनाये, ऐसा लिखा है। ये दलित भाई तपस्वी पुरुष हैं। ये कितने कष्ट सहते हैं। यजु: अ० १६ मं० ३६ में—

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥

"प्रभु हमें पवित्र करो, हमारी बुद्धि पवित्र करो, संसार के सब जनों को ढेढ, भंगी, चमार, ईसाई, मुसलमान सबको पवित्र करो।" वेदों में उपदेश है 'यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय च।' अर्थात् वेद की पवित्र वाणी ब्राह्मण से लेकर शूद्र पर्यन्त और नीचातिनीच के लिये है। पाराशर स्मृति में कहा है। 'आपत्काले तु निस्तीर्णे शौचाचारं न चिंतयेत्' याने आपत्तिकाल में

शौच का विचार छोड़ दे। यद्यपि ये लोग अभी इतने साफ नहीं रहते हैं जितने कि रहने चाहियें, तो भी क्योंकि हिंदू जाति पर आपत्ति है अतः हमें दलितों को मिलाना चाहिये। इन दलितों के मैले रहने में दोष हमारा ही है क्योंकि ऊपर के तीन वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों ने अपने अपने काम छोड़ दिये। कवि ने कहा है—

तीन वर्ण ऊपरके बिगड़े, फिर शूद्रों का कहना क्या।
फूटी आंख लगी ठोकर, फिर दोष पर को देना क्या॥

खैर, आर्यसमाजी भाई तो जातिभेद से तो छुआछूत मानते ही नहीं और पढ़े लिखे सनातनी भी नहीं मानते। क्योंकि शास्त्रों में कहा है 'आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति स पंडितः' जो सब प्राणियों को अपनी तरह देखता है वही पंडित है। ईशोपनिषद् में कहा है। "यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते" जो सब भूतों को अपने समान जानता है वह दुःख नहीं पाता। 'यस्मिन् सर्वाणि भूतानि आत्मैवाभूद्विजानतः। तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः॥' जो सब भूतों को अपने आत्मा में एकसा देखता है उसको कोई मोह, कोई शोक नहीं होता है। भगवान् श्रीकृष्णजी महाराज ने गीता के ४ अध्याय में कहा है। "शुनि चैव श्वपाके च पंडिताः समदर्शिनः" पंडित वही है जो ब्राह्मण से लेकर चांडाल पर्यन्त सबको एकदृष्टि से देखे। महर्षि

दयानन्द, टागोर, मालवीय, तिलक व महात्मा गांधी सब यह कहते हैं कि दलितों को ऊंचा उठाओ। किसी जाति को नीच समझना पाप है और हिन्दुओं की किसी भी जाति को अछूत मानना व बताना नहीं चाहिये। कट्टर से कट्टर सनातनधर्म सभाओं ने व्यवस्था देकर यह निश्चित करदिया है कि अछूतों के छूने में पाप नहीं। उनको स्कूलों में बिठाने में पाप नहीं। उनको पढ़ाने में पाप नहीं और उनको मन्दिरों में देवदर्शन कराने में पाप नहीं। वे अपनी स्मृतियों से निम्नलिखित प्रमाण देते हैं—

तीर्थे विवाहे यात्रायां संग्रामे देशविप्लवे।
नगरग्रामदाहे च स्पर्शास्पर्शं न विद्यते॥

तीर्थ में, विवाह में, यात्रा में, युद्ध में, विद्रोह के समय और नगर या ग्राम में जिस समय आग लग रही हो तो ऐसी हालत में छुआछूत का विचार नहीं करना चाहिये।

आपद्यपि च कष्टायां रुग्णाये पीड़िते तथा।
मातापित्रोर्गुरोश्चैव निर्देशे वर्तनात्तथा॥ (बृहस्पति)

विपत्ति में, कष्ट में, रोगपीड़ित अवस्था में और माता पिता तथा गुरु की आज्ञा से कहीं जाने पर जहां स्पर्शदोष की सम्भावना हो वहां भी स्पर्शदोष नहीं लगता।

कूपकुण्डे, शिलाखण्डे नौकायां गजमस्तके।
विवाहे तीर्थयात्रायां स्पर्शदोषो न विद्यते॥ (व्याघ्रपाद)

अर्थात् कूप पर, पत्थर के चबूतरे पर, नाव में, हाथी पर, विवाहोत्सव में और तीर्थयात्रा में स्पर्शदोष नहीं होता।

ग्रामे तु भयसंसृष्टो यात्रायां कलहेषु च।
ग्रामसंदूषणे चैव स्पर्शदोषो न विद्यते॥ (शतातप)

ग्राम में भय का सन्देह होने पर, यात्रा में, झगड़े में, ग्राम में विगाड़ होने पर स्पर्शदोष नहीं लगता।

देवयात्राविवाहेषु यज्ञप्रकरणेषु च।
उत्सवेषु च सर्वेषु स्पृष्टास्पृष्टं न दुष्यति॥ (अत्रि)

देवयात्रा में, विवाह में, यज्ञों में और सभी उत्सवों में स्पर्शदोष नहीं लगता।

प्राकाररोधे विषमप्रदेशे सेनानिवेशे भवनस्य दाहे।
आरब्धयज्ञेषु महोत्सवेषु तेष्वेव दोषा न विकल्पनीयाः॥ (अत्रि)

चहार दीवारी के अन्दर, पहाड़ी प्रदेशों में, सैनिकों के समूह (पड़ाव) में, घर जलने के समय, यज्ञ के आरम्भ में और महोत्सवों में स्पर्शदोष नहीं लगता।

गंगातीरे महानद्यां चक्रे कालिञ्जरे गिरौ।
संकीर्णे पथि वेद्यां च स्पर्शदोषो न भैरवे॥

अर्थात् गङ्गातीर में, समुद्र में, चक्र के ऊपर, कालिंजर गिरि के ऊपर, संकीर्ण रास्ते में, वेदी के ऊपर और भैरवो-

चक्र जगन्नाथजी की पुरी में स्पर्शदोष नहीं है। निगमः श्लोकाङ्कः ८७ तन्त्र।

मुक्तिक्षेत्रे भुक्तिक्षेत्रे कालपृष्ठे सुरालये।
संगमेऽतिमनुष्याणां तत्र स्पर्शः सुखावहः॥

अयोध्या, काशी, मथुरा, हरिद्वार, काञ्ची, अवन्तिका, द्वारिका मुक्तिक्षेत्र, व्यापार के स्थान, वावन सिद्ध, पृष्ठ देवता का स्थान मेला में स्पर्श सुखप्रद है याने दोष नहीं वल्कि पुण्य है। वाक़ी जिसमें छुआछूत का दोष लग भी जाता है उसके लिये लिखा है 'हरिनाम्नैव निष्कृतिः' हरि के स्मरण से ही प्रायश्चित्त होजाता है। और कोई आगे भी वढ़े हैं तो उन्होंने आचमन वतलाया है। सो घर पर आकर पैर धोकर कुल्ला करना सदा ही अच्छा है। हिन्दू-धर्मशास्त्रों में गोरक्षा से वढ़कर कोई पुण्य नहीं माना जाता है। और जितने प्रायश्चित्त वतलाये हैं उन सव में उत्तम प्रायश्चित्त गोरक्षा और गोसेवा है और क्योंकि दलितों को ऊंचा उठाने से और उनको गले लगाने से हम उन्हें ईसाई, मुसलमान होने से वचाते हैं। इस कारण हम उन्हें गोभक्षक होने से वचाते हैं। जव गोभक्षक होने से वचा दिया तो गोरक्षा अपने आप ही होगई। इसलिये पुण्य ही अधिक है। अतः दलितों को समान अधिकार दो और ऊंचा उठाओ। सनातनधर्म के नेता श्री० पं० दीनदयालुजी व्याख्यानवाचस्पति ने अपने व्याख्यान में पुष्कर में कहा था

कि मन्दिरों में सबसे सुन्दर पूजनीय मूर्त्ति बालमुकुन्दजी महाराज की मानी जाती है। बालमुकुन्दजी का चित्र एक सुन्दर बालक का होता है जो चरणारविन्द को करारविन्द में लेकर मुखारविन्द में धारण किये हुए हैं। अर्थात् शूद्र, क्षत्रिय, ब्राह्मण आदि सब एक हैं, बल्कि शूद्र ब्राह्मण के मुख में है। जब पैर में कांटा लग जाता है तो पैर को भी ऊंचा उठाना पड़ता है, शिर को नीचे झुकाना पड़ता है, हाथ से पैर को छूना पड़ता है। पेट को भी झुकाना पड़ता है। तब कहीं कांटा निकल कर शरीर को शांति प्राप्त होती है। इसी प्रकार अछूतों को जो पैर रूपी हैं उनको उठाने के लिये शिररूपी ब्राह्मण, हाथ रूपी क्षत्रिय और पेट जंघा रूपी वैश्यों को कुछ नीचे झुकना पड़ेगा और शूद्रों को दारू और मदिरा, मांस आदि छोड़कर ऊंचा उठना पड़ेगा तब कहीं दलितोद्धार होगा। स्मृतियों में कहा है—

> आर्त्तानां मार्गमाणानां प्रायश्चित्तानि ये द्विजाः ।
> जानन्तोऽपि न यच्छन्ति ते वै यान्ति समं तृतैः ॥

अर्थात् प्रायश्चित्त चाहने वाले का जो द्विज प्रायश्चित्त नहीं कराते वे स्वयं पातकी और पतित हो जाते हैं। इस वास्ते सनातनधर्मानुसार हमारे उपरोक्त हिन्दू-महासभा के व वेदों व स्मृतिवाक्यों के बतलाने पर भी इन दलित भाइयों के प्रायश्चित्त कर ऊंचे उठाने में जो बाधक होते हैं वे निश्चय ही नरक को जावेंगे।

जितने दलित भाई हैं उनमें अधिकांश क्षत्रिय, ब्राह्मण आदि उच्च वर्णों में से हैं। कुछ लोग मुसलमानी समय में और कुछ ब्राह्मणों के समय में ज़बर्दस्ती से नीच बना दिये गये हैं, परन्तु हमारी स्मृतियों में लिखा है।

बलाद्दत्तं बलाद्भुक्तं बलाच्चापि लेखितम्।
सर्वान् बलकृतानर्थात् अकृतान् मनुरब्रवीत्॥

अर्थात् ज़बर्दस्ती से खाना खिला देना, लिखा लेना, कुछ करा लेना आदि ये सब बलात्कार से कराये गये कर्म न किये के बराबर हैं। जैसे किसी के मकान का ज़बर्दस्ती बैनामे पर दस्तखत करवा लेने से वह बैनामा वाज़िब नहीं समझा जाता।

उसीप्रकार इनका दलित माना जाना वाज़िब नहीं। भंगियों, चमारों के गोत्र अधिकतर क्षत्रिय और ब्राह्मणों से मिलते हैं। हमारे ढेढ़, कोली, भोई, तन्तुवाय वैश्य हैं। क्योंकि खेती करना, कपड़े बुनना, बज़ाजी करना ये सब भगवान् कृष्ण के उपदेशानुसार भी वैश्य के कर्म हैं इन्हें नीच कदापि न समझना चाहिये। मूल में एक ही वर्ण था। शास्त्रों में कहा है—

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।

अर्थात् जन्म से सब शूद्र उत्पन्न होते हैं संस्कार से द्विज बनते हैं। पहिले जातियां कोई जन्म से नहीं थीं, ये तो डिग्रियां हैं। जैसे चाहे कायस्थ, ब्राह्मण, वैश्य, भंगी कोई भी हो जो

बी. ए. पास होगया वह अपने नामके आगे बी० ए० की डिग्री लगायेगा। इसी प्रकार वर्मा, शर्मा, गुप्त आदि कर्मानुकूल डिग्रियां हैं। और लोग अपने २ गुरुकुलों से दी हुई डिग्रियों के समान इन्हें धारण करते थे। यूरोप के "प्रोटेस्टेन्ट और रोमन कैथोलिक" लोगों की पारस्परिक लड़ाई की और अत्याचारों की हम बहुत बुराई करते हैं। और कहते हैं कि बड़े पापी थे वे औरतों तक को धर्म के नाम पर जला देते थे। और उनके बच्चों को भट्टियों में भुनवा देते थे। कभी २ गर्भवती औरतों के जलते समय ताप के कारण बच्चा गर्भ से निकल जाता था तो वह नवजात शिशु भी उसी समय भट्टी में झोंक दिया जाता था। परन्तु हम उनसे भी अधिक ज़ुल्मी हैं कि हम पीढ़ी दर पीढ़ी सिर्फ इसलिये कि एक पुरुष किसी खास जाति में पैदा हुआ है अतः उससे भंगी का काम लेते हैं। प्राचीन समय में ऋषि लोग अपने आप जंगल में पाखाने फिरते थे। प्राचीन समय में भंगी के लिये कोई शब्द नहीं था। क्योंकि वे सब बाहर पाखाना फिरने जाते थे। श्वपच जो भंगी के लिये प्रयोग किया जाता है यह गलत है। क्योंकि श्वपच का अर्थ भंगी यौगिक रीति से किसी हालत में नहीं सिद्ध होता। यह हलालखोर, भंगी, मेहतर आदि सब मुसलमानी ज़माने के शब्द हैं और उन्हें हमें छोड़कर वाल्मीकि भाई कहना चाहिये। छोटे हिस्सों को आगे रखने से हमारी क़ीमत चढ़ती है।

देखो १५ में ५ आगे रहेगा तो १५ ही रहेगा। परन्तु यदि

छोटे १ को आगे करदिया तो ५१ हो जावेंगे। इसलिये दलितों को ऊंचे उठाओ। समुद्र की लहरें एक दूसरे के आगे चलती हैं परन्तु प्रेम से लिपटती हैं। चन्द्रमा अपने प्रकाश से अपने से छोटे तारों को प्रकाशित करता है। इसी प्रकार हमें हमारे छोटे दलित भाइयों को ऊंचा उठाना चाहिये। किसी कवि ने कहा है।

सोही पुरुष सराहिये जो विधु के विधि होय।
रवि को कहा सराहिये जो उगै तरैया खोय॥
नहीं वे नेकसीरत क्या करैं गर खूबसूरत हैं।
गुलों से खार बहतर हैं जो दामन थाम लेते हैं॥

जो ब्राह्मण यह कहते हैं कि कलियुग में सब एकाकार हो-जायेंगे, उनसे हमारा कहना है कि वे इस दलितोद्धार का विरोध कर अपने शास्त्रों और ज्योतिषियों को क्यों झूंठा पटकते हैं। उन्हे तो अपने शास्त्रों को सत्य साबित करने के लिये आगे होकर दलितोद्धार में भाग लेना चाहिए। जो भाई यह कहते हैं कि चाहे लाख करो जो भाग्य में होगा सो होगा क्योंकि भावी प्रबल है, उन्हें हमारा कहना है कि हमें प्रयत्न कर २ अछूतों को ऊंचे उठाने दो, आप विघ्न न डालकर कोरे कर्म पकड़ कर तमाशा देखे जावो।

इसी प्रकार जो गंगाजी के उपासक हैं उन्हें तो दलितोद्धार से डरना ही न चाहिये, क्योंकि लिखा है।

गंगा गंगेति यो ब्रूयान् योजनानां शतैरपि ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ॥

अर्थात् गङ्गा गङ्गा जो सौ योजन से भी बोले वह सर्व पापों से मुक्त होकर वैकुण्ठ जाता है। जब वे गङ्गाजी के नाम से मुक्त हो जावेंगे तो विचारे दलित भाई के छू जाने से वे और उनके ठाकुरजी कैसे भ्रष्ट होवेंगे, यह समझ में नहीं आता। जो दूसरों के छूने से भ्रष्ट होता है समझलो वह अत्यन्त ही कमज़ोर है।

बड़ा आदमी वही है जिसके सत्संग से दूसरा छोटा भाई लाभ उठाकर ऊंचा बने। यदि उपदेष्टा ही भ्रष्ट होने लगे तो वह उत्तम उपदेष्टा नहीं है। इसी प्रकार यदि भंगियों के आने से ठाकुरजी भ्रष्ट होजावें तो वे ठाकुरजी नहीं और वह धर्म धर्म ही नहीं। धर्म तो पारसमणि है जिसकी संगति से लोहा भी सुवर्ण होजाता है। यह तो अग्नि है जिसमें सारा कूड़ा कर्कट जलकर राख होजाता है। और जैसे अग्नि सबको जलाकर अपना वही पवित्र रूप सब कूड़े कर्कट से भी धारण कराता है। उसी प्रकार धर्म भी सब पतितों की शुद्धि कर धार्मिक तथा पवित्र बना देता है। जिसने इस अग्निरूप धर्म को छोड़कर चौके, चूल्हे और छुवाछूत की उपासना की, बस वही अग्निरूप धर्म बिना राख होगया और उसको सारी दुनियां उसी प्रकार रोंदती है जैसे कि राख को चींटियां तक रोंद डालती हैं। अग्नि से बड़े २ जंगली शेर चीते डरते हैं मगर राख से कोई नहीं डरता।

इसी प्रकार जिस जाति में धर्म का जोश होता है उसको सर्वत्र विजय है, अधार्मिक की नहीं। शास्त्रों में कहा है—

धर्म एव हतो हंति धर्मो रक्षति रक्षितः॥
जो धर्म की रक्षा करे उसकी धर्म रक्षा करे।
जो धर्म को मारदे उसका नाश होजाता है॥

शिवजी के उपासकों को तो छुवाछूत से कभी परहेज ही न करना चाहिये। क्योंकि वम्भोला शिवजी के कोई भेदभाव नहीं। उनके खप्पर में तो सब चढ़ता है। वे तो संहाररूप रुद्र हैं। उनके लिये तो सनातनी कहते हैं कि शिवपुराण में लिखा है।

प्रातःकाले शिवं दृष्ट्वा नैशं पापं विनश्यति।
आजन्मकृतं मध्याह्ने, सायाह्ने सप्तजन्मनाम्॥

शिवजी के प्रातःकाल के दर्शन से रात्रि का पाप, दोपहर के दर्शन से जन्म भर का, और सायंकाल के दर्शन से सात जन्म का सब पाप दूर हो जाता है।

अब या तो यह कहो कि शिवपुराण झूंठा है और इसमें गपोड़े भरे पड़े हैं। और यदि इसे सच्चा मानते हो तो रात दिन महादेव के दर्शन करते हुए भी अछूतों के छूने से अपने आपको भ्रष्ट क्यों मानते हो? रामानन्दी तिलक के लगाने वाले रङ्गजी के सम्प्रदाय वाले गोष्ठी में उन जब लोगों को अपने साथ भोजन करा लेते हैं जो कि उनके जैसा

तिलक लगा लेते हैं चाहे वो भंगी हो अथवा ब्राह्मण। इसी प्रकार जगन्नाथजी में भी सब साथ बैठ कर कच्चा पक्का खाते हैं। इससे भी दलितोद्धार प्राचीन सिद्ध होता है। हिन्दुस्तान का क्षेत्रफल १८ लाख २ हज़ार ६ सौ ५७ वर्गमील है। आकार में हमारा देश ७ जर्मनी, १० जापान और १५ ग्रेटब्रिटेन के बराबर है। हमारी आबादी रूस के निकले बाद सारे यूरोप के बराबर है। संयुक्त प्रदेश अमेरिका के हम तिगुने हैं। संसार के प्रत्येक ५ आदमियों में से १ हमारी पूजनीय या भारतभूमि का है। परन्तु फिर भी हम निर्बल हैं, अपमानित और पराधीन हैं! क्योंकि हम स्वयं हमारे पद-दलित करने वाले हैं। हमारे भाइयों पर ज़ुल्म कर २ हम गुलाम बन गये।

लुटा दिया ताजो तख्त अपना निफाक से दिल लगा के हमने।
हम अपनी भूलों से अब तक जालिमों के पाले पड़े हुए हैं॥

हमारे पैरों को हम आप काटकर फेंकने वाले हैं, हम सात करोड़ से अधिक भाइयों को अछूत कहकर ईसाई और मुसलमान होने का मौका दे रहे हैं। उनके ईसाई, मुसलमान होने पर जूते से डरकर समान अधिकार दे देते हैं परन्तु जब तक वे विचारे राम कृष्ण के भक्त रहते हैं; गोरक्षा करते हैं, उनको हम नहीं अपनाते। गोहत्यारे होने पर उनको छाती से लगाते हैं।

इस सब गोहत्या का पाप हमें लगता है क्योंकि एक दलित मुसलमान होने पर कम से कम २ गायें प्रतिवर्ष तो मारेगा ही। फिर उसके परिवार के हिसाब लगने से सूद दर सूद के हिसाब से जैसे १२ वर्ष में १००) का ॥) सैकड़े सूद से दुगुने हो जाते हैं वैसे ही १ विधर्मी यदि ५० वर्ष भी जीवेगा तो उसको १०० गायें मारनी होंगी। अगर ५ का कुटुम्ब होगा तो ५०० गायें मारी जावेंगी इस प्रकार इसके बेटे पोतों का हिसाब लगाया जावे तो १ दलित को मुसलमान, ईसाई होने देने से हज़ारों गौओं की हत्या का पाप लगता है और १ को बचा लेने से हमें हज़ारों गौओं के बचाने का पुण्य होता है। सोचिये हमारे ७ करोड़ से अधिक अछूत सर्विया की आबादी से २० गुना, मान्टीनीग्रो से १०० गुना, स्विटजलैंन्ड से १६ गुना, बेलजियम से ८ गुना, जापान से ड्योढ़ा, ग्रेटब्रिटेन से भी कई करोड़ अधिक हैं। इतनी बड़ी आबादी को कोरे रूढ़ि के गुलाम मूर्ख पंचों व ब्राह्मणों से डरकर छोड़ना सरासर मूर्खता है। अब तो जमा और गुणा सीखो, भागाकार और बाक़ी से काफ़ी नुक़सान उठा चुके। इस वास्ते इन दलितों को अपने में सम्मिलित करो। जिसका हाज़मा अच्छा होता है वह तन्दुरुस्त रहता है। जिसको दस्त की बीमारी रहती है वह सदा निर्बल रहता है। इस वास्ते अछूतों को ऊंचा करो, अपने में जज़्ब करो जैसे कि प्राचीन समय में हमारे बुज़ुर्ग सब को हज़म कर लेते थे। देखो राजतरङ्गिणी, प्राचीन इति-

हास, तथा डाक्टर भंडारकर के लेख। मेरी "शुद्धि" नामक पुस्तक में देखो इस विषय में विस्तृत लेख लिखा है। छठी और सातवीं शताब्दी में महाकवि भवभूति और बाणभट्ट की कविताओं से प्रकट होता है कि एक वर्ण से दूसरे वर्ण में समूह के समूह सम्मिलित होते थे। अतः वर्णाभिमान त्यागो और अछूतों को शुद्ध होने पर खान पान में भी सम्मिलित करो।

ओ३म्

❋ द्वितीय अध्याय ❋

दलितोद्धार के विरोधियों की करतूतें।

दलितोद्धार के विरोधी आचार, चटनी, शर्बत, सोडावाटर, लेमोनेड आदि सब खाते ही हैं परन्तु केवल मुंह से नहीं कहते। वे तो एक प्रकार से अपने क्रियात्मक जीवन द्वारा अछूतोद्धार का समर्थन ही कर रहे हैं, लेकिन बोलते नहीं। हम केवल इतना कहते हैं कि दम्भ को छोड़ो और जो करते हो सो करो। कौन देखने गया कि आचार, चटनी किसने बनाया? वह ब्राह्मण था या शूद्र। परन्तु सब खाते हैं। खैर! शफाखाने की दवाई के लिये तो यही कह सकते हैं कि आपद्धर्म है परन्तु इस के लिये क्या कह सकते हो? सिवाय इसके कि जीभ का स्वाद नहीं छूटता! गुड़ किस तरह तैयार किया जाता है यह सभी जानते हैं। शूद्रों की जूतियां तक उस में गिरती हैं मज़दूर अपने पैरों से इसे कूटते हैं। सांभर की झील के नमक में चाहे गधे, कुत्ते चले जायँ, चाहे बकरे, भैंसे सब नमक हो जाता है और सब उसे खाते हैं। मन्दिर में

झाड़ू देते वक्त भंगी दर्शन करले तो कोई कुछ नहीं कहता। परन्तु यदि कोई यह कहे कि भंगियों को दर्शन करने दो तो लड़ने के लिये तैयार हो जाते हैं। चमार के मढ़े हुए नगारे, तबले मन्दिर में पड़े रहें तो कोई कुछ नहीं कहता। परन्तु यदि वह दर्शन करने की इच्छा प्रकट करे तो लड़ाई करने को तैयार होते हैं और मुसलमान रण्डियों को, उनके भड़वों और तबलचियों को मन्दिर में आने देते हैं। यह मिथ्या जीवन छोड़ो और जो करते हो उसे कहने लग जाओ और उसे अच्छा कहने लगो। बस यही हम चाहते हैं। सब अछूतों पर लड़ते हैं। परन्तु अभी तक यह किसी ने नहीं बतलाया कि अछूत कौन हैं? किस शास्त्र में यह अछूत लिखे हुए हैं? इन सात करोड़ में से ६॥ करोड़ तो वे जातियां हैं जो स्पष्ट-रूप से क्षत्रियों में से निकली हैं। बाक़ी केवल ५० लाख का ही झगड़ा है। परन्तु पोपदल ने विना प्रमाण सबको अछूत मान रक्खा है और जो भाई वस्तुतः शास्त्रों में अछूत कहे गये हैं उन्हें अपने स्वार्थवश अछूत से छूत (स्पृश्य) मान लिया है। जैसे मछुवे, धीमर आदि को काशी के पण्डितों ने शुद्ध मानकर उनके हाथ का पानी वग़ैरह पीने लगे।

साधारण लोग तर्कबुद्धि लगाकर कुछ सोचते ही नहीं कि ये काशी के पण्डित मनमाना घरजाना कैसे कर सकते हैं। सारे कूओं में ही भांग पड़ गई तो क्या किया जावे? मूर्ख जनता का तो ऐसा ही हाल है जैसा कि कहानी में कहा है,

एक पंडितजी गांव में जाकर इस प्रकार कथा कहने लगे कि एक निर्जल देश में ककड़ी हुई वह ५ मन की थी, सब लोग बोले "हरये नमः" उस ककड़ी के ५०० बीज निकले और एक २ बीज ५० मन का था। सब लोग बोले "हरये नमः" सत्य वाणी महाराज! बोलो सियावर रामचन्द्र की जय। उन्होंने यह नहीं सोचा कि ५ मनकी ककड़ी का ५० मन का बीज कैसे हो सकता है? अतः तर्क से काम लो और मिथ्या-प्रलाप छोड़ो। असल अछूत तो सर्प, बिच्छू आदि विषैले जन्तु हैं जिनके छूने से वे काट लेते हैं या ब्राह्मण देवता हैं जो विचारे अछूतों की छाया पड़ते ही लड़ने को तैयार रहते हैं। बड़े आश्चर्य की बात है कि हम (१) शफाखाने की दवा खाते हैं। (२) कसाइयों, गोभक्षकों के हाथ का मांस हमारे मांसभक्षक हिन्दू भाई लेते हैं, उसमें कसाई कभी २ गोमांस सस्ता होने के कारण बकरे के मांस में मिलाकर बेचते हैं। (३) आगरे में कुवे वाले की पूजा के वक्त उसके हाथ का खाते हैं। (४) पीरपैग़म्बरों को पूजते समय मुसलमानों का छूआ प्रसाद खाते हैं। (५) चर्बी का घी बेचते और खाते हैं। (६) चमारों की बनाई शक्कर और घी खाते हैं। (७) घोसियों का दूध पीते हैं जो नगरों से जाते वक्त उन्हीं चरियों में गोमांस भरकर लेजाते हैं। (८) कुंजड़ों के यहां से फल खरीदते हैं जो गोश्त रोटी खाते हुए झूंठे मांस और पानी के छींटे से लगे हुए फलों को बेचते हैं। (९) ख्वाजासाहब की

मिन्नतें मानते हैं। (२०) झूठी रेवड़ियां और देग का खाना खाते हैं। (२२) मुहर्रम में ताजियों के नीचे से अपने बच्चों को निकाल कर गोभक्षकों के हाथ का प्रसाद खाते हैं। (२२) मुसलमान हकीमों की बनाई हुई तथा अंग्रेज़ों की बनाई हुई तरह २ की पेटेन्ट दवाइयां और कुश्ते खाते हैं। (२२) आगरे में पतासे बनाने वाले सब कारीगर मुसलमान हैं और हम उनके हाथ के पतासे खाते हैं परन्तु हम अक्ल के पीछे इतना लट्ठ लिये दौड़ते हैं कि हमारे दलित भाइयों के हाथ का खाना तो दरकिनार उनके छूने से, उनके मन्दिर में घुसने से पाप मानते हैं। बलिहारी है इस हिन्दू-जाति की बुद्धि पर !

(२३) मौलाना हसननिज़ामी खुले नोटिस देरहा है कि ऐ भंगियो ! मुसलमान होजाओ, हकीम अजमलखांसाहब तुम्हारा झूंठा पानी पीलेंगे।

यदि भंगी मुसलमान होजावेगा तब मूर्ख हिन्दू उन भंगियों के मुसलमान होने के बाद उनके साथ बैठ कर चिलम पीलेंगे और अपनी खाट तथा बिछौने में बैठा लेंगे, परन्तु जब तक भंगी क्या कोली भाई भी हिन्दू हैं, हमें चिलम पीते लज्जा आवेगी। हमारी जाति में फर्क पड़ जावेगा। हमारी नाक कट जावेगी। बलिहारी है इस बुद्धि पर।

(१४) आश्चर्य है कि ताज़िये पूजते हमें शर्म नहीं आती, मुसलमान फ़क़ीरों के घरों में औरतों को भेजते हमें शर्म नहीं

आती, परन्तु बेचारी मेहतरानी से जो युक्तप्रान्त के प्रत्येक गांव में बच्चे जनाने का काम करके तुम्हारी माताओं की पीड़ा दूर करती है, उससे तुम घृणा करते हो। माईक्रासकोप से हलवाई की मिठाई, अन्य चीज़ें और दही लाकर देखो उसमें आपको असंख्य कीड़े नज़र आवेंगे और आप देखेंगे कि किस प्रकार पाखाने की मक्खियां वहां के कण लाकर मिठाई पर बैठती हैं परन्तु ये सब अपवित्र पदार्थ हम खा लेते हैं। हम अछूतोद्धार के हिमायती तो सफ़ाई से रहने का उपदेश देते हैं और बाज़ार की अपवित्र वस्तुयें खाने से भी लोगों को मना करते हैं परन्तु अछूतोद्धार के विरोधी पंडित, ठाकुर, सेठ, सब गट कर जाते हैं। ये नलों में से मुसलमानों का छूवा घड़ा लाकर रख लेते हैं और उसका पानी सदा पीते हैं। और दुर्गन्ध युक्त सड़े घरों में रहते हैं। परन्तु अपने अछूत भाइयों के प्रश्न आने पर नाक भौं चढ़ाते हैं। कूप-मंडूक मत बनो। समय की रफ़्तार देखो। इस तारक्क़ी के ज़माने में आप छकड़ा गाड़ी में बैठकर जय नहीं पा सकते। अब अभिमान नहीं चलेगा। बोलशेविज़्म (साम्यवाद) आ रहा है, यदि अधिकार न दोगे तो ज़बर्दस्ती सत्याग्रह कर २ के अधिकार लेलेंगे। उच्च जातियों का जुल्म तो देखो। जब चौका देने जावें तो उसका साफ़ किया हुवा पवित्र माना जावे, परन्तु साफ़ करने वाला शुद्ध होकर यदि फिर चौके में जावे तो वह अपवित्र होजाये। ये भंगी के पास बैठकर भोजन कर लेंगे, परन्तु यदि किसी ने

भोजन के पश्चात् कह दिया कि यह तो भंगी है तो दूर भाग जाते हैं। हमारा निवेदन तो यही है कि भंगी जाति से घृणा मत करो, अशुद्धता से घृणा करो, चाहे वह भंगी हो या ब्राह्मण में।

चमार मन्दिर की ढुलाई करने जावे, मरम्मत करने जावे, लीपने जावे तब तो पवित्र, किन्तु वही अछूत जिसने मूर्ति घड़ कर बनाई और मन्दिर बनाया वही जब मन्दिर में जाता है तब मन्दिर अपवित्र हो जाता है। हम लोग विष्णुसहस्रनाम में 'दासोऽहं दासोऽहं' का पाठ करते हुए दास बन गये। हमारी दासता यहां तक बढ़ गई कि हमने परमेश्वर तक को पराधीन बनादिया। और हमारे धर्मभ्राताओं को दर्शन तक नहीं होने देते। यह कदापि नहीं हो सकता कि जो घर में गुलाम हो वह बाहर आज़ाद हो जावे। स्वामी दयानन्द ने बताया कि हमें सामाजिक बन्धन और धार्मिक पोपलीला उठानी पड़ेगी।

दो वर्ष हुए जब मैं स्वयं बम्बई जाकर भाटियों के गुरु तथा वल्लभकुल सम्प्रदाय के आचार्य से उनके मन्दिर में ही श्रीमान् अधिकारी जगन्नाथजी के साथ जाकर मिला था और उनसे विदेशी वस्तु व्यवहार, अछूतों के मन्दिर प्रवेश पर दो घंटे तक वार्तालाप किया था। अन्त में वे निरुत्तर होगये थे। परन्तु वे अभी तक दलितोद्धार का विरोध करते हैं और बम्बई में नाम-मात्र की सार्वजनिक सभा का ढोंग रचकर इस विरोध को

हिन्दू जनता के विरोध का रूप देकर दलितोद्धारकों को गा- लियां दिलवाते हैं। हमें ऐसे विरोधों की जरा भी पर्वाह नहीं करनी चाहिये। हम मारवाड़ी समाज के नेता देशभक्त श्रीमान् सेठ जमनालालजी बजाज, श्रीमान् जुगलकिशोरजी बिड़ला, श्रीमान् श्रीकृष्णदासजी जाजू को बधाई देते हैं कि वे ऐसे विरोधों की पर्वाह नहीं करते।

अछूतोद्धार के सच्चे समर्थक कर्मवीर, दानवीर, सेठ जुगल- किशोरजी बिड़ला कहा करते हैं कि कैसी आश्चर्य की बात है कि "रूढ़ी के गुलाम स्वार्थी कुछ नामधारी सनातनी, जिनकी संख्या १ और २ करोड़ के बीच में है वे, अपने को २२ करोड़ हिंदुओं के प्रतिनिधि कहकर प्रत्येक सुधार का विरोध करते हैं और जनता उनका कुछ विरोध नहीं करती। जनता को उनको २२ करोड़ का प्रतिनिधि नहीं मानना चाहिये, क्योंकि जनता का प्रतिनिधि वही बन सकता है जो उसके हित की बात कहे।" २२ करोड़ हिन्दुओं में ७ करोड़ तो अछूत हैं उनसे ये २ करोड़, जिनमें ब्राह्मण, क्षत्री व वैश्य पुराने विचारवाले सम्मिलित हैं, सदा दूर भागते हैं और उनके हक़ों के खिलाफ सदा भाषण देते हैं। आर्य्यसमाज ऐसे दलितों को ऊंचा उठाने का प्रयत्न करता है इस वास्ते आर्य्यसमाज उनका प्रतिनिधि कहलाया जा सकता है। शेष रहे १३ करोड़ शूद्र तो उनके हक़ों में भी ये रूढ़ी के गुलाम बाधा पहुंचाते हैं इस वास्ते ये इनके भी प्रतिनिधि नहीं कहलाये जा सकते। अब इन १३ करोड़ शूद्रों

के सच्चे प्रतिनिधि तो वेही लोग हो सकते हैं जो इनसे मिलते जुलते हैं, इनके साथ खाते, पीते, उठते, बैठते हैं और इनको यज्ञोपवीत आदि देकर ऊंचा उठाते हैं। इन २ करोड़ लोगों को अपने आपको सनातनी कहने का अधिकार नहीं है। क्योंकि सनातन तो वही हो सकता है जो सब से पुराना हो। वेद सब से प्राचीन हैं और वेद "यथेमां वाचं कल्याणीं" की आज्ञा से सब को वेद पढ़ने पढ़ाने का समान अधिकार देते हैं। ऐसे उपदेशों को मानने वाले आर्य लोग ही सनातनी कहलाने के अधिकारी हैं। स्वार्थी, रूढ़ी के गुलाम, नामधारी कुछ सनातनियों को २२ करोड़ हिन्दुओं के नाम से अपील करने का अधिकार नहीं है। क्योंकि आधुनिक सनातनी तो जन्म के कारण करोड़ों को वेदों के पढ़ने का अधिकार नहीं देते। अतः वे आदि सनातनी भी नहीं हैं। इस वास्ते जनता धोखे से बचे। हमारी समाचारपत्रों से अपील है कि वे दलितों के सुधार के विचारों के विरोधियों के लेख जब कभी समाचारपत्रों में छापें तो ऐसा कदापि न छापें कि हिन्दुओं ने विरोध किया, बल्कि यह छापें कि कुछ स्वार्थी, रूढ़ी के गुलाम, नामधारी सनातनियों ने विरोध किया। हमें पंच पंचायती के अन्याई बन्धनों को काटना पड़ेगा। सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक आन्दोलन साथ २ चलने चाहियें। जो लोग यह कहते हैं कि सब कुछ ठीक है, पहले कोई भेदभाव नहीं था परन्तु अब हम सतयुग के से सामर्थ्यवान् नहीं हैं। अब तो कलियुग है अतः ऐसा ही होगा। ऐसे भाइयों

से हमारा नम्र निवेदन है कि उनकी यह पोच दलील है। यदि कलियुग में यही बात है और यही कलियुग का लक्षण है कि सतयुग से उलटा चला जावे तो सतयुग में पैरों से चलते थे, अब आप पैरों को ऊपर करके शिर से चलो तो भी अछूतों का उद्धार ही होगा, क्योंकि इसमें शूद्रों का उत्थान होगा और शूद्रों को ब्राह्मणों का स्थान मिलेगा। इसलिये अपने शास्त्रों को सिद्ध करने के लिये ही दलितोद्धार में लग जावो।

❀ ओ३म् ❀

❀ तृतीय अध्याय ❀

दलित भाइयो ! ईसाई, मुसलमान मत बनो ।

भारत में स्वाधीनता के सूर्य्य की लालिमा फिर चमकने लगी है और भारत के दिन फेर फिरे हैं। चारों ओर क्रांति के आसार दृष्टिगोचर हो रहे हैं। धार्मिक बन्धन ढीले पड़ गये हैं और लोग स्वतन्त्रता से विचार करने लगे हैं। पुराने विचारों के हिंदू भी अब दलितोद्धार में लगने लगे हैं। अतः दलित भाइयों से हमारा निवेदन है कि वे अब घबरावें नहीं और जल्दी न करें। जो अछूत भाई अपने पैरों आप खड़े न होकर, अपना धर्माभिमान खोकर ईसाई और मुसलमान होने की धमकी देते हैं उनसे हमारा नम्र निवेदन है कि न तो ऐसी धमकियों से उनका उद्धार होगा और न ईसाई, मुसलमान होने से ही उनका बेड़ा पार होगा। उनको ज़रा सोचना चाहिये कि उनके दलित भाई जो उनसे सौ वर्ष पहिले कायरता से मुसलमान बन गये उनकी आज दशा सुधरने के स्थान में बड़ी भारी दुर्गति है। खाने को रोटी नहीं और पहिनने को कपड़ा

नहीं। इसी प्रकार से ईसाई वे के वे ही सफेद गोरे ईसाइयों के सामने काले आदमी बने हुये हैं। उनको वे अपने कबरस्तानों में दफ़न नहीं होने देते और न अपने गिर्जों में बराबर बैठने देते हैं। हिन्दू-धर्म ही सर्व-श्रेष्ठ है। इसमें न तो विदेशी सिद्धांत है जिससे कि "Let the weaker go to the wall" अर्थात् न तो निर्बलों का नाश किया जाता है और न "Survival of the fittest" का सिद्धान्त है जिससे कि "जिसकी लाठी उसकी भैंस" वाली कहावत चरितार्थ होती है, और न "Pr- o cess of natural Selection" का सिद्धान्त है जिससे कि गरीबों को चक्की में पीसा जाता है और जो संसार की चक्की में पिसने से बच जाता है उसकी पूजा की जाती है। यह सब काले गोरे का भेद आदि पश्चिमी सभ्यता की बातें हैं। प्राचीन आर्यसभ्यता का तो यही आदर्श है कि निष्काम भाव से निर्बलों और दलितों का उद्धार कर उनको सबल आत्माभिमानी बनाया जाय। प्रिय दलित भाइयो! आप मुल्लाओं के बहकाने में आकर मुसलमान बनने की धमकी देते हो। छी! इस्लाम का १३०० वर्षों का इतिहास संसार में जंगलीपन फैलाने वाला तथा तबाही व बर्बादी लानेवाला सिद्ध हुआ है।

१—इस्लाम में स्त्रियों की कोई इज्ज़त नहीं। स्त्रियों को सिर्फ खेती माना गया है जो सिर्फ बीज डालने के लिये है। इन में कोई पवित्रता नहीं, सदाचार नहीं। जब चाहा तब त-

लाक दे दिया। जिसकी बीवी से न पटी चट दूसरी घर में डाल ली।

२—इस्लाम के सिद्धान्त देशद्रोही और समाजद्रोही हैं। उन में विचारस्वतन्त्रता नहीं, सहनशीलता नहीं।

३—इस्लाम धार्मिक स्वतन्त्रता का शत्रु है। जो मुसलमानी धर्म छोड़ना चाहे उसके लिये इसमें क़त्ल की आज्ञा है। ज़रा सी वात में अपने ही भाइयों को "काफ़िर" और मुर्तद बना देते हैं।

४—इस्लाम के सिद्धान्त जुल्म और ग़ैरइन्साफी की बुनियाद पर हैं। इन्होंने हज़ारों पुस्तकालय जला दिये।

५—इस्लाम में विदेशीपन भरा पड़ा है। क्योंकि ये लोग पवित्र भारत भूमि को छोड़ कर मक्का, मदीने की तरफ़ लौ लगाये बैठे रहते हैं और काबुल व तुर्की के लिये दुआ पढ़ते रहते हैं।

६—मुसलमान कमीनेपन से तथा नीच नीतियों से अपने ही पड़ोसियों और वहिनों को वहकाकर भगा ले जाते हैं, उनका सतीत्व नष्ट करते हैं और अपनी चचेरी वहन से ही निकाह पढ़ लेते हैं।

७—इस्लामी धर्म व्यभिचार का फैलाने वाला है। अतः व्यभिचारी पुरुष से संगति करना महापाप है। इसके मुल्ला

और मौलवी अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये क़ुरान के इलहाम और अरब के पैग़म्बर की झूंठी बातें फैला कर अन्धविश्वास का प्रचार करते हैं और लोगों को मज़हबी गुलामी में फंसाते हैं।

८—मुसलमान भारतवर्ष की हिन्दी भाषा, इसकी देवनागरी लिपि, इसका साहित्य, इसके त्यौहार और इसकी सभ्यता का निरादर करते हैं। अतः यह धर्म देशद्रोह का ज़बरदस्त प्रचारक है।

६—इन्होंने हिन्दुओं को लूटा, इनके मन्दिर, देवालय तोड़े और तीर्थों को अपवित्र किया। स्त्रियों का सतीत्व नष्ट किया। इन्होंने भारत भूमि को कभी अपनी मातृभूमि नहीं समझा। ये अरब की भाषा में निमाज़ पढ़ते हैं और दिन में पांच दफ़े विदेशी काबे की तरफ सिर झुकाते हैं। इनके नेता स्मर्ना, तुर्की, अफ़गानिस्तान, मक्का, मदीने के स्वप्न देखते रहते हैं और इनके सब ही त्यौहार विदेशी हैं। ऐसी हालत में ये सभ्य नहीं कहे जा सकते। स्वयं टर्की, परसिया वालों ने इस्लामी धर्म की बुद्धिहीन बातों का त्याग कर दिया है और खलीफा को भगा दिया है और स्त्रियों को स्वतन्त्र कर दिया है। अतः दलित भाइयों को मुसलमानी धर्म में सम्मिलित कदापि न होना चाहिये। हमारे दलित भाइयों का एकमात्र निस्तारा मज़दूर संघ स्थापित करने

से होगा न कि ईसाई, मुसलमान बनने से। जबतक हमारे दलित भाई अपने पैरों आप न खड़े होंगे और अत्याचारी अन्याइयों से, चाहे वे घर के ही क्यों न हों, भयङ्कर युद्ध न करेंगे और अपनी जान को जोखम में न डालेंगे तबतक उनका उत्थान कठिन है। स्वाधीनता की लड़ाई में उन्हें लाखों कुरवानियां करनी पड़ेंगी, तब कहीं धर्म के पागल कुछ रंगाचारी तथा वर्णाभिमानी वल्लभकुली उनको अपने मन्दिर में प्रवेश करने देंगे। प्रिय अछूत भाइयो! सब से प्रथम शुद्धाचारी, सदाचारी, सत्यवादी और न्यायप्रिय, कर्मवीर बनो। तुम्हारा बेड़ा अवश्य पार होगा। साथ २ ही उच्च जातिवालों को कम से कम आत्मरक्षा के ख्याल से ही निम्नलिखित कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिये।

प्राइमरी स्कूलें, रात्रिपाठशालाएं, औद्योगिक पाठशालाएं (Industrial Schools) खोलें, इन्डष्ट्रियल ट्रेनिङ्ग के लिये छात्रवृत्ति दें, सहयोग बैङ्क (Co-operative Bank) व सहयोग समिति (Co-operative Society) खोलें, औषधालय स्थापित करें, गावों में चलते फिरते औषधालय भेजें, चलते फिरते पुस्तकालय भेजें, उपदेशक भजनीक भेजें, १६ संस्कारों के लिये पुरोहित भेजें, पानी के लिये कुए खुदवादें (Magic Lantern) लालटेन जादू के द्वारा अछूतों की दशा अच्छी बनाने के लिये नाना स्थानों पर चित्र दिखा कर लेक्चर दें तथा नीच जाति के हिन्दुओं में सफाई रखने तथा अपनी दशा सु-

धारने के भाव जागृत करें। हिन्दुओं से प्रार्थना करें कि नीच जाति के लोगों को अपने भाई की तरह वर्ते और हिन्दूसमाज में सब तरह के अधिकार दें। अस्पृश्यता के भाव बिलकुल हटादें और अछूतों को सार्वजनिक संस्था में बराबर के हक़ दें। आचार की शुद्धि सदा ही श्रेष्ठ है परन्तु हिन्दू-जाति में अस्पृश्यता के भूत ने यहां तक अपना डेरा जमाया कि इन्होंने अपने लाखों रोते बिलखते सम्बन्धियों को निर्दयता से विधर्मियों के हाथ सौंप दिया। विधर्मियों ने हमारी धर्मभीरुता से लाभ उठा कर सैकड़ों प्रकार के प्रलोभन देकर करोड़ों हिन्दुओं को ईसाई, मुसलमान बना डाला। इस छुआछूत के कारण से हमने हिन्दू-समाज में भी नाना प्रकार की उपजाति और उपवर्ण उत्पन्न कर सदा के लिये आपस में फूट का बीज बो दिया है, जिसका फल आजतक हिन्दू-जाति ग़ुलाम होकर भुगत रही है। अतः प्रत्येक देशाभिमानी, धर्माभिमानी का परम कर्त्तव्य है कि वह अस्पृश्यता के क़िले को तहस नहस करदे, दलितों के घर पर जावें और उनको साफ सुथरा रहना सिखाने के लिये साबुन बांटें, उनमें मज़दूरी की महत्ता का भाव जागृत करें और प्रति सप्ताह प्रीतिभोजन करें जिसमें उच्च जाति और नीच जाति के पुरुष साथ बैठ कर भोजन किया करें। चौका चूल्हा में धर्म माननेवाले पुरुष कदापि अपने समय और शक्ति का पूरा उपयोग नहीं कर सकते। वे मिथ्याभिमानी हो जाते हैं। छुआछूत के मिटने के साथ २ ही जाति

पांति के बन्धन ढीले पड़ेंगे और लोग जात विरादरी के अत्याचारों से छूटेंगे और रूढ़ी के गुलाम मूर्ख पञ्चों से मुक्त होवेंगे। दलितोद्धार से हिन्दू-समाज का रुधिर पवित्र होगा और इसके फैफड़ों को शुद्ध पवन प्राप्त होगा। वह वलिष्ठ होगा और साधारण मनुष्य निर्भय, वीर और मौत का मुकाबिला करने वाले बनेंगे। फिर किसी गुण्डे का यह साहस न होगा कि वह हमारी मा वहिनों की ओर बुरी आंख से देखे? अतः प्यारे भाइयो! दलितोद्धार की लड़ाई के वीर सैनिक बनो और अस्पृश्यता के कलङ्क को भारतमाता के मस्तक पर से सदा के लिये धो डालो।

दलित भाइयों का भी यही कर्तव्य है कि वे किसी के बहकाने में आकर अपना धर्म न छोड़ें। धर्म बदलने वाला महापापी होता है और घोर नरक में जाता है। उन्हें अपने पैरों आप खड़े होना चाहिये, पवित्रता सीखना चाहिये और सत्याग्रह द्वारा अपना अधिकार लेना चाहिये, लोभ या सांसारिक सुखों की लपेट से या कष्टों से डरकर अपना धर्म कभी न छोड़ना चाहिये। मुझे उन दलितों पर दया आती है जो अपने स्वार्थवश अपने ही भाइयों को नीचा रखने का प्रयत्न करते हैं। खुद तो चौधरी बनकर ठाकुर साहब की दी हुई चिल्लेदार पगड़ी बांधकर अपना हांसिल माफ कराकर इतराते हैं और अपने दूसरे भाइयों से डण्डे मारकर बेगार लेते हैं। आपके बुजुर्गों ने कितने २ कष्ट सहे, अपनी गर्दनें कटवाईं, स्त्रियां

जौहर व्रत धारण कर २ के आग में जलीं, परन्तु अपना धर्म नहीं छोड़ा। अकवर वादशाह ने वीरवल से पूछा कि दुनियां में सव से नीचा कौन है ? उसने उत्तर देने के लिये कुछ मोहलत चाही। इधर जाकर दिल्ली के भंगियों से कहा कि तुम मुसलमान होजाओ, यदि नहीं वनोगे तो ज़वर्दस्ती वनाये जावोगे, परन्तु भंगियों ने इन्कार किया और वादशाह से जाकर शिकायत की कि वीरवल हमें ज़वरन् मुसलमान वनाता है। तव वादशाह की समझ में आया कि मुसलमान इतने नीच हैं कि भंगी तक इनमें सम्मिलित नहीं होना चाहता।

चतुर्थ अध्याय ।

पवित्र वेदों में आज्ञा है ।

रुचानां धेहि ब्राह्मणेषु रुचं राजसु नस्कृधि रुचम् ।
विश्वेषु शुद्रेषु मयि धेहि रुचारुचम् ॥ यजुर्वेद १।१८।मं० ४८॥

इसका अर्थ यह है हमारे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सब प्रेम से रहें। यदि ऊंच नीच का भाव होता तो कदापि "मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे" हम सबको मित्र की दृष्टि से देखें, ऐसा उपदेश न होता और न यह उपदेश होता "द्यौः शान्तिः इत्यादि" अर्थात् हम सारे संसार में शान्ति चाहते हैं। वेदों में कहा है।

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते संभ्रातरो वावृधुः सौभगाय ।
युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः ॥
यजुः ५ । ६० । ५ ॥

तुममें बड़ा नहीं, कोई छोटा नहीं, ये सब तुम आपस में भाई हो। लोक में सबसे अच्छे ऐश्वर्य के लिये मिलकर बढ़ो अर्थात् परस्पर साहाय्य सहायक भाव से मिलकर प्रयत्न करो।

विपक्षी प्रश्न करते हैं और कहते हैं कि दलितों को ऊंचा नहीं उठाना चाहिये। क्योंकि साहव, चूतड़ की जगह चूतड़ रहेगा और मुंह की जगह मुंह रहेगा। परन्तु हम पंडितजी, वावू साहव, सेठजी से पूछते हैं कि कभी आप चूतड़ को काट कर भी जीवित रह सकते हैं। पेट में पाखाना भरा है। पेट को काटकर जीओ। किन्तु आपतो रद्दी साथ ही लिये फिरते हैं। इस शरीर में कितनी दुर्गन्धि भरी हुई है। जव आप पाखाना साफ करते हैं तो क्या आप भंगी नहीं हो जाते। भंगी का मतलव क्या है? जो पाखाना साफ़ करे, वह भंगी है। क्योंकि आप अपना पाखाना साफ करते हैं लिहाजा आप भंगी हैं। जो कहो कि दूसरों का पाखाना जो साफ करे सो भंगी हैं सो इसमें भी आप भंगी ही हैं क्योंकि आप अपने वच्चों का, वूढ़े माता पिताओं का और अन्य परिवार के मनुष्यों का पाखाना साफ करते हैं। जो यह कहो कि परिवार को छोड़कर जो दूसरों का पाखाना साफ करे वह भंगी है सो भी ठीक नहीं क्योंकि आपके मित्र आपकी जाति विरादरी के नहीं होते तो भी दुःख में उनका पाखाना पेशाव उठादेते हैं या जव वरसात होती है और कीचड़ और मलमूत्र में हमारे पैर सन जाते हैं। उस समय हम मेहतर को अपना पाखाना वाला पांव साफ करने के लिये नहीं बुलाते वल्कि स्वयं अपने हाथ से रगड़ २ कर साफ कर लेते हैं।

तो क्या फिर भंगी नहीं हो जाते हैं? इसलिये अभिमान

छोड़कर "वसुधैव कुटुम्बकम्" के उपदेश पर चलो। धोबी मैल धोने वाला तो नीच और मैला करने वाला ऊंच यह कैसी विचित्र बात है कि हम पाखाने से घर को अपवित्र करने वाले को तो ऊंच और उसे साफ करने वाले को नीच मानते हैं। वास्तव में बात उलटे प्रकार से माननी चाहिये। विपक्षी प्रश्न करते हैं। साहब! क्या गधे के भी घोड़े बनते हैं। तो हम पूछते हैं क्या घोड़े के भी गधे बने हैं? मनुष्य एक जाति है उसकी दूसरी जाति नहीं बनती। यदि गधे का घोड़ा नहीं बन सकता तो घोड़े का गधा भी नहीं बन सकता, चाहे वह कैसा ही खराब क्यों न हो। परन्तु हमारी हठधर्मिता तो इतनी बढ़ गई है कि कुत्ते को अपने साथ बग्गी में बैठाये फिरेंगे, भंगियों की भूंठन खाने वाले कुत्ते से अपना मुंह चटवा लेंगे, तब भ्रष्ट नहीं होंगे। परन्तु साफ वस्त्र पहने हुए अछूत आजावे तो हम अपने आपको भ्रष्ट समझते हैं। परन्तु वही भंगी ईसाई टिकटकलेक्टर बनकर हमें धक्का मारे तो कुछ नहीं और पंडितजी के हाथ से टिकट लेकर देखे तब तो अपवित्रता दूर भागती है। भंगी का खून भी वैसा ही लाल है जैसा ब्राह्मण का है, वही हाथ, कान, नाक, मुंह जैसे ब्राह्मण के हैं वैसे ही अछूत के भी हैं। कई रियासतों में भंगी घोड़ों के चरवादार (सईस) होते हैं परन्तु बड़े २ राजा उनके जीन किये हुए घोड़ों पर बैठते हैं और अंग्रेज़ तो भंगियों को नौकर रखते ही हैं, अर्दली रखते हैं, खानसामा रखते हैं, और बड़े २ रईस इन भंगी खानसामों के हाथ का

खाना खा लेते हैं, अतः किसी को जाति के ही कारण अशुद्ध मानना भयङ्कर पाप है और अंग्रेज़ों को यह कहने का मौका देना है कि तुम एफ्रीका के अच्छे २ स्थानों में रहने के योग्य नहीं हो, क्योंकि तुम काले हो। जब हम हमारे दलित भाइयों के साथ ऐसा अत्याचार करते हैं तो हमें अंग्रेज़ों को बुरा कहने का क्या अधिकार है ?।

अछूतोद्धार के लिये चिरमी और सोने का निम्नलिखित संवाद पाठकों को अति लाभकारी होगा। सोना सुनार से कहता है कि मेरी ऊंची क़ीमत है और मैं इस काले मुंह की चिरमी के साथ क्यों तोला जाता हूं? इस पर चिरमी जवाब देती है और सोने से कहती है-मेरा सुन्दर लाल रंग है परन्तु मेरा काला मुंह तब से हुआ है जब से मैं नीच सोने के साथ तुली हूं। मारवाड़ी कवि ने इसी विषय पर निम्नलिखित दोहे लिखे हैं। सोना कहता है:—

सोनो कहे सुनार ने, उज्ज्वल म्हारी जात।
काला मुख की चिरमड़ी क्यों तुली हमारी साथ।

चिरमी का जवाब:—

लालों में की लालड़ी, लाल हमारो अंग।
कालो मुख तब से हुयो, जब तुली नीच के संग।

इसी प्रकार जो ब्राह्मण अपने मनुष्य-जाति के भाइयों को

अछूत कहकर पास नहीं बैठने देते हैं, उन से नाक भौं चढ़ाते हैं, उनको अछूतों की ओर से यही उत्तर है कि ब्राह्मणों के कर्म क्षीण होने से आज मनुष्य-जाति की यह दशा हुई कि वे अछूत कहलाने लगे। क्योंकि जिस मनुष्य का दिमाग खराब होजावे और उसके पैर यदि गड्ढे में पड़ जावें तो पैर का दोष नहीं बल्कि दिमाग का ही दोष माना जाता है। इसी प्रकार इन दलित जातियों के अपवित्र रहने के ज़िम्मेवार हमारी समाज के शिररूपी ब्राह्मण हैं।

भाइयो, अब तो चेतो! "दिन बहुत चढ़ गया अब ख्वाब का हंगामा नहीं" परस्पर प्रेम करो क्योंकि:—

मुरव्वत में मुरव्वत है और मुहब्बत में मुहब्बत है।
हिमाकत में हिमाकत है और खसूमत में खसूमत है॥
अगर दिलों में नहीं अब भी जोश गैरत का।
तो पढ़लो फातहा कौमी विकार गैरत का॥
वफा को फूंक दो, मातम करो मुहब्बत का।
जनाज़ा ले के चलो कौमी दीनों मिल्लत का॥

परमात्मा सब को समान दृष्टि से देखता है। ज्ञान से सब को समान फल होता है। बाह्य अवस्था से ज्ञान का सम्बन्ध नहीं है। गीता का यही उपदेश है कि मनुष्य अपने अपने कर्म का पालन करते हुए भंगी से ब्राह्मणपर्यंत ज्ञान का वैसे ही फ़ल प्राप्त कर सकते हैं जैसे वकील फीस के बहाने

अधिक रुपया लेकर, वैद्य दवा के वहाने अधिक रुपया लेकर, नौकर चीज़ चुराकर, हाकिम रिश्वत लेकर समान रीति से पाप के भागी होते हैं।

जैसे इसमें अवस्था से भेद नहीं पड़ता, उसीप्रकार से एक नौकर अपनी नौकरी, वैद्य अपनी ओषधि में, वकील अपनी वकालत और भंगी अपनी झाड़ू बुहारी देने में ईमानदार हो सकता है और परमात्मा की ओर से सब को समान फल मिलता है। झाड़ू देता हुआ भंगी, वरतन मलता हुवा कहार, जूता गांठता हुआ चमार उतना ही पुण्य का भागी होसकता है जितना कि एक पंडित। इसी वास्ते महाभारत में युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के वरावर उस ब्राह्मण का पुण्य माना गया जो तीन दिन भूखा रह कर और अपने बच्चों को भूखा रखकर एक अतिथि के सत्कार के लिये अपना भोजन देदिया। परमात्मा की दृष्टि में सब उसी प्रकार एक वरावर है। जैसे हिसाब किताब के जानने वाले की दृष्टि में सब वरावर हैं।

$$\frac{१०००}{२०००} \quad \frac{१००००}{२००००} \quad \frac{१००००००}{२००००००} \quad \frac{५}{१०} \quad \frac{१}{२}$$

यदि एक करोड़पति अपने करोड़ रुपयों में से ५० लाख पुण्य करता है तो यह उसी गरीब के वरावर है जो ४ पैसे की कुल पूंजी में से २ पैसे खर्च कर देता है।

स्वराज्यवादी मित्रों को महात्मा गांधीजी का सच्चा उप-

देश है कि जबतक दलितों को न उठावोगे तबतक स्वराज्य नहीं मिलेगा। दलितों को न उठावोगे तो काले गोरे का भेद बना ही रहेगा। अब तो अंग्रेज़ भी ब्राह्मणों के दादागुरू बन गये। इसी काले गोरे के भेद के कारण हाल में ही एंग्लो इण्डियनों के चिल्लाने पर दो पापी गोरों के जिन्होंने अबला पर बलात्कार किया था, बेंतें भंगी से न मराकर अंग्रेज़ से पिटवाई। यह बहुत बुरी बात है और अंग्रेज़ी न्याय व शासन पर धब्बा लगाने वाली है। क्योंकि जब भंगी ब्राह्मण कैदी के जेल में बेंते मार सकता है तो अंग्रेज़ी कैदी के क्यों नहीं? बहुत भाई कहते हैं कि बात तो सच सही है परन्तु लोकमत के विरुद्ध हम नहीं जा सकते। उनको हमारा कहना है कि सत्य और परोपकार के लिए हमारे बुजुर्गों ने प्राण दिये, दधीचि ऋषि ने अपना शरीर देवताओं को अर्पण कर दिया, राजा दिलीप ने गोरक्षा के लिए सिंह को अपना शरीर अर्पित कर दिया, तो फिर हम क्या इतना भी नहीं कर सकते कि दलित भाइयों के लिए रूढ़ी की गुलामी को छोड़ दें। इन रूढ़ी के गुलामों के लिए मुझे वह कहानी याद आती है, कि एक गुरुजी ने चेले से कहा कि बेटा जिसे पकड़ना उसे छोड़ना नहीं, चेला बरसात के दिनों में कीचड़ में गिरने लगा। चेले के हाथ में गधे की पूंछ आगई वह लात खाता रहा, परन्तु पूंछ नहीं छोड़ी। लोगों ने समझाया कि पूंछ क्यों नहीं छोड़ते ताकि लातें न पड़ें, इस पर वह मूर्ख चेला यह कहने लगा

कि मेरे गुरुजी ने कहा है कि जिसे पकड़ो उसे मत छोड़ो। हमारे बुजुर्ग निर्भीक थे। उपनिषदों में कहा है "अभयं वै जनकः प्राप्तोऽसि" हे जनक! तूने निर्भयता प्राप्त करली है। "नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः" बलहीन पुरुष परमात्मा को नहीं प्राप्त कर सकता, अतः निर्भयता से दलितोद्धार करो।

प्रश्न—क्या प्राचीन लोग मूर्ख थे, जो उन्होंने ऐसी बातें प्रचलित कीं।

उत्तर—यह कहना भी गलत है, (प्राचीन समय में जाति-पांति नहीं थी) देखो सिल्यूकस की लड़की से चन्द्रगुप्त ने विवाह किया था, उलूपी से अर्जुन ने विवाह किया था, तक्ष-शिला का राजदूत डोरेटस जब भारत में आया तो वह परम वैष्णव था उसका शिलालेख मिलता है। सूर्य की मूर्ति के उपा-सक सीदियन, जो सेवक व भोजक कहलाते हैं वे यहां ग्रीस से बुलाये गये और ब्राह्मणों में शामिल किये। ८ वीं शताब्दी तक भारत में जाति पांति का भेदभाव नहीं था।

केवल ४ वर्ण थे, गीता में कहा है—"चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः" उनमें आपस में गुण, कर्म, स्वभावानुसार विवाह हो जाते थे। ग्रीस सीदियन जो आते थे वे सब हिन्दू बना लिये जाते थे। प्राचीन समय में जैन, बौद्ध वगैरह बिना शुद्धि किये ही सम्मिलित कर लिये जाते थे [illegible] स्वत-न्त्रता थी। देखो ओसा नगरी के पोरवाल ब्राह्मण से लेकर

चाण्डाल तक जैनधर्मावलम्बी बने और सब में परस्पर विवाह हुआ है "ओसवालों का गोत्र चांडाल्या" इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। वस्तुपाल, तेजपाल जिन्होंने आबू के बड़े २ मन्दिर बनवाये, वे वैश्य होते हुए भी बड़े २ सेनापति थे। ग्रीक लोगों के पुराने सिक्कों पर विष्णु की मूर्ति है और "ईशो" ग्रीक भाषा में लिखा हुआ है। ईसा के पहले की दूसरी शताब्दी में अग्नि में आहुति डालती हुई ग्रीकों की तसवीरें उनके सब सिक्कों पर मिलती हैं। देखो अजमेर का (म्यूज़ियम) अद्भुतालय और उसकी सूर्य की मूर्ति और शिलालेख। परन्तु हम इतने प्रमाणों के होते हुए भी अपनी बातों को तर्क और बुद्धि से नहीं विचारते। रूढ़ी के गुलाम होगये। वास्तव में हम "ब्लाटिङ्ग पेपर" स्याहीचूस हैं। जिसने चाहा हम पर धब्बा लगा दिया। मुसलमान आये तो पीरों, ताजियों को पूजने लगे। तैंतीस करोड़ देवी देवता को छोड़कर फ़क़ीरों की मिन्नतें मानने लगे। इस तरह से अब यह हिन्दू-समाज रूपी स्याहीचूस विधर्मियों के धब्बों से सड़ गया है। अतः अब तो अपनी गिरह की अक्ल लगाओ। इन हिन्दू ,मुसलमानों के झगड़ों के बाद हिन्दू कौम में कुछ आसार जागृति के नज़र आने लगे हैं।

रंग लाया है किसी का खून मरजाने के बाद।
क़ौम जागी है ज़रा सुध ठोकरें खाने के बाद॥

अतः इसका पूरा लाभ उठाकर यह कविता सच्ची कर दिखावो।

बाईस करोड़ जिस्म में अब एक जान है ।
अजमत वही है अपनी और अपनी शान है ॥
हर गुल अलग २ हैं मगर सब की बू है एक ।
गौहर जुदा २ हैं मगर आबरू है एक ॥
"अखतर" है बेशुमार, मगर सब की जू है एक ।
पहलू में दिल जुदे हैं मगर अरजू है एक ॥

त्रिंशकोटि-कलकल-निनाद-कराले ।
द्वित्रिंशभुजैः धृतखरतरकरवाले ॥

मातृभूमि के प्रेम में मस्त होकर उपरोक्त गीत को सच्चा बनाओ, सब एकमत होकर, एक धर्म होकर आर्य्यसभ्यता का प्रचार करो । मक्का में हवन हो, सेंटपाल के गिर्जे पर ओ३म् का झंडा लहरे, वर्लिन में वेदमन्त्रों का गान हो । कृष्ण और सुदामा के समान गरीब, अमीर मिलो, राजसूय यज्ञ में जब स्वयं भगवान् कृष्ण ने चरण धोने का काम लिया तो आप अछूतों की सेवा से क्यों घबराते हो ?

जब कोई मन्दिर में जाता है वह भगवान् के चरणों को ही शिर नवाता है । बड़े बुजुर्गों की इज्जत करनी होती है तो चरण छूकर ही की जाती है । अंगूठी पहननी होती है तो सब से छोटी अंगुली में ही पहनी जाती है । लोहे और सोने के युद्ध में सोने ने अभिमान कर के कहा कि मैं २१) रु० तोले

बिकता हूं, और लोहा रुपये का चार ४ सेर बिकता है। इस वास्ते मैं बड़ा हूं, परन्तु वही लोहा संस्कृत होकर तार बनता है जो सितार में लग कर ७४) रु० तोले बिकता है। और स्टील बन कर उसकी तलवारें, बन्दूकें बनती हैं। जिससे स्वयं सोने की रक्षा होती है। अतः लोहा बड़ा और सोना छोटा है। और आम कहावत भी यही प्रसिद्ध है, कि अमुक व्यक्ति ने अमुक का लोहा मान लिया। हिन्दुओं को जो राजा हरिश्चन्द्र के ऊपर अभिमान है, उसका बड़प्पन इसी में हुआ कि उसने चांडाल के घर नौकरी की और उसे नीचकर्म न समझा। यदि प्राचीन काल में चाण्डाल को छूना पाप माना जाता है तो सत्यवादी हरिश्चन्द्र कदापि यह अधर्म का काम नहीं करते क्योंकि उन्होंने धर्म के लिये तो सब राजपाट ही त्यागा था फिर किस प्रकार अछूत की नौकरी कर अधर्म में पड़ते? सत्यवादी हरिश्चन्द्र की एक ओर तो उपरोक्त उमगें हैं दूसरी ओर हमारे साधु भाई यह प्रश्न और शङ्कायें करते हैं कि (१) चमारों को उठाने से हमारा धर्मभ्रष्ट हो जायगा, जैसे धर्म कोई छुईमुई हो। महाराज धर्म तो अग्नि है। (२) कुछ ढोंगी जटाजूट साधु कहते हैं कि मुसलमान तो हिन्दू बन ही नहीं सकता, इनको हमारा उत्तर है कि देखलो बनते हैं कि नहीं। शुद्धिसभा द्वारा ४० हज़ार तो अभी आगरा, मथुरा, भरतपुर में बन गये और करोड़ों को आपके बुज़ुर्गों ने प्राचीन समय में बना डाला। (३) कुछ यह कहते हैं हमारा

तो निवृत्ति मार्ग है हमें इन बातों से क्या मतलब ? महाराज आप धर्म के लक्षण ही को नहीं जानते। धर्म तो वह है (यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः) जिससे इस लोक में और परलोक में सुख और परलोक में सिद्धि हो, वह धर्म है। आप श्वास ही क्यों लेते हैं ? रोटी ही क्यों खाते हैं ? संथारा खींचकर बैठ जावो। इससे सिद्ध हुवा कि निवृत्ति में आपका विश्वास नहीं है। (४) कुछ यह कहते हैं कि यह कलिकाल है ईश्वर की यही इच्छा है तुम्हारे किये कुछ नहीं हो सकता अतः पुरुषार्थहीन हो जावो। खूब कही महाराज ! कुछ कर कर, तो बताइये। अपने लड्डू और मोहनभोग और तापने की लकड़ियों के लिये क्यों पुरुषार्थ करते हो ? जब कुछ किये नहीं होता तो आप हमारे अछूतोद्धार ही का विरोध क्यों करते हो ?

क्योंकि किसी के किये तो कुछ हो ही नहीं सकता। सब परमात्मा की इच्छा से ही होता है। अछूतोद्धार के लिये स्वयं प्रकृति शिक्षा दे रही है। देखो पानी नीचे की ओर ही बहता है। नदियां नीचे की ओर ही बहती हैं। सती स्त्री वही कही जाती है जो अपनी निगाह नीची रखती है। बड़ा पुरुष वही कहा जाता है जो नम्र होता है और नीचे नमता है। मारवाड़ी में कहावत है—

नमे आंबा आमली नमे दाड़म दाख।
एरन्ड बेचारा क्या नमे ओछी उनकी जात॥

इस वास्ते जो अभिमान कर अछूतोद्धार का विरोध करते हैं वे स्वयं ही नीच जाति के हैं। इसी प्रकार जनता का ध्यान नीच कही जाने वाली जातियों की ही तरफ़ जाना चाहिये। अपने आपको ऊंचा कहना अभिमान का सूचक है और अहंभाव अधिक रखने से क्या दुर्दशा होती है सो सुनिये। भेड़ बकरी "मैं मैं" करती है तो वह काटी जाती है और बछड़ा "म्यांह" ?मैं हूं कहता है (मैं हूं) तो उसे बैल बनकर दिन रात गाड़ी खींचनी पड़ती है और खेती करना है और उस के मरने के बाद उस की खाल का ढोल बनता है परन्तु उसकी "मैं" नहीं जाती, ढोल बजाओ तो बोलता है "हम हम" यह हम हम की ज्यों ज्यों आवाज़ करता है खूब ठुकता है। इसलिये उसकी "हम" निकालने के लिये उसकी अन्तड़ियों की तांत को पिनारा काम में लाता है और उससे रूई धुनकता है। उस वक्त "तुंई तुंई" है की आवाज़ निकलती है। इस कहानी से सबक हमें यही लेना चाहिये कि सब को परमात्मा के पुत्र मानकर प्रेम करना चाहिये। जब स्वयं भगवान् कृष्ण ने सुदामा जैसे निर्धन दरिद्री के सूखे तन्दुल चबाये और उन्हें छाती से लगा लिया, तो आप अपने निर्धन दरिद्री अछूत भाइयों से क्यों परहेज़ करते हो? थोड़ी देर के लिये यह भी मान लिया जाय कि आप बहुत बड़े थे, परन्तु अब तो हाल यह है कि जैसे पाखाना कहे कि मैं पहले हलवा था, दूध था, परन्तु अब क्या हो? इसी प्रकार आप सब कुछ

थे परन्तु अब तो गुलाम हो। अतः व्यर्थ का अभिमान छोड़कर इन दलितों के साथ भ्रातृवत् व्यवहार करो। महर्षियों का तो यह सिद्धान्त था कि (उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्) अर्थात् उदारचित्तों का परिवार यह विस्तृत वसुन्धरा ही है।

"दो क़ालिब एक जां यह पुराना ख़याल था" अतः हिम्मत मत हारो, विरोध की पर्वाह मत करो, दलितोद्धार में दत्तचित्त होकर लग जाओ। हिन्दू-जाति का बेड़ा पार हो जायगा।

"उठेंगे ख़ाक के तूदों से दस्तगीर अपने।
ज़मीन हिन्द की उगलेगी शूरवीर अपने॥"

देखिये आपके पूर्वजों की उदारता कैसी विशाल थी, उनके लिये सारा संसार कुटुम्बी थी, परन्तु उन्हीं की सन्तति आज ऐसी तुच्छ और अनुदारता एवं संकीर्णता की केन्द्रस्थली हो रही है कि संसार को कुटुम्ब मानना तो दूर रहा अपने ही भाइयों को तिरस्कृत कर रही है। यह हमारे दौर्भाग्य की पराकाष्ठा है।

देशभक्त श्री सयाजी राव महाराजा बड़ौदा की आज्ञानुसार बड़ौदा राज्य में आदर्श दलितोद्धार करनेवाले राज्यरत्न व्याख्यानवाचस्पति मास्टर आत्मारामजी कहते हैं कि महार, चमार, भंगी, अछूत हिन्दुओं के कष्ट इतने हैं कि उनको वर्णन करते हुए कलेजा मुख को आता है। चमार का बच्चा जंगल

में प्यास का मारा मरने को है पर क्या मजाल कि कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य उसको छूत के भय से घूंट पानी तो देदे। कुत्तों को हम छूते हैं। बिल्लियां चूहे खाने वाली हमारे चौके में घुस आती हैं। पर साफ सुथरा महार व चमार हमारे पास नहीं आ सकता। सर्कारी स्कूलों, सर्कारी अस्पतालों; सर्कारी बोर्डिङ्ग हाउसों में इनको हम गालियां दे और डंडे दिखाकर हांक डालते हैं। भगवन्! हमें बल दो कि हम निम्नलिखित वेदाज्ञाओं को मानकर अपने दलित भाइयों को समान अधिकार देकर अपनी आत्मशुद्धि करें।

दलितोद्धार पर वेदाज्ञायें।

मानव पथ-प्रदर्शक वेदों में कहा है:—

(१) प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु।
प्रियं सर्वस्य पश्यन् उत शूद्र उतार्य्ये॥

मुझे देवों, मनुष्यदेवों अर्थात् ब्राह्मणों में प्रिय बना; मुझे क्षत्रियों में प्रिय बना, मुझे सब प्राणियों का प्रिय बना, मुझे शूद्र तथा वैश्यों में प्रिय बना।

(२) संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥ ऋग्वेद॥

(३) सहृदयं साम्मनस्यं अविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्योन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या॥ अथर्व०॥

(४) समानी प्रपा सह वोन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि ।
सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः ॥ अथर्ववेद ॥

(५) सध्रीचीन्वः संमनसस्कृणोम्येकश्नुष्टीन्संवसनेन सर्वान् ।
देवा इवामृतं रक्षमाणाः सायं प्रातः सौमनसो वोस्तु ॥
॥ अथर्ववेद ॥

ये सब वेदमन्त्र हैं। परमात्मा आज्ञा देते हैं कि "संगठन के लिए सब मनुष्यों को चाहिये कि "इकट्ठे चला करें, इकट्ठे बोला करें, एक समान विचार किया करें, जिस प्रकार समझदार लोग सदा प्रेम से रहते हैं, वैसे ही सदा रहा करें।"

"हे मनुष्यो ! तुम सबके दिल मिले हुए हों, तुम्हारे मन मिले हुए रहें, तुम में कभी आपस में लड़ाई झगड़ा न हो, तुम सब एक दूसरे को ऐसा प्यार करो जैसे गौ अपने नये २ पैदा हुए बछड़े को प्यार करती है।"

"तुम सब इकट्ठे पानी पिया करो, इकट्ठे बैठकर भोजन खाया करो, इकट्ठे मिलकर बड़े २ काम किया करो, और प्रातः सायं इकट्ठे होकर सन्ध्या हवन किया करो।"

सब इकट्ठे ही रहा करो, मकान सब के एकसे हों, जिस प्रकार देवता लोग अमृत की रक्षा करते हैं उसी प्रकार तुम एक दूसरे की रक्षा किया करो।"

दलितोद्धार पर शास्त्राज्ञायें ।

दलितोद्धार पर शास्त्रों, स्मृतियों और पुराणों में सैकड़ों प्रमाण हैं। और सब प्राचीन विद्वानों की सम्मति में वर्णव्यवस्था गुण कर्म से ही मानी गई है, जन्म से नहीं।

(१) सत्यं दानं क्षमा शीलमानृशंस्यं तपो घृणा ।
दृश्यन्ते यत्र नागेन्द्र, स ब्राह्मण इति स्मृतः ॥
महा० वन० अ० १८० ॥

सच्चाई, दान, क्षमा, सुशीलता, मृदुता, तप, दया ये गुण जिन लोगों में हों उनको ब्राह्मण कहना और मानना अन्य को नहीं।

(२) तावच्छूद्रसमो ह्येषो यावद्वेदे न जायते ।
महा० वन० अ० १८० ॥

जबतक मनुष्य वेद नहीं पढ़ता तबतक वह शूद्र ही रहता है।

(३) न विशेषोस्ति वर्णानां सर्वं ब्राह्ममयं जगत् ।
ब्रह्मणा पूर्वसृष्टं हि, कर्मभिर्वर्णतां गतम् ॥
महा० शान्ति० अ० १८९ ॥

चारों वर्णों में कोई भेद नहीं है, सभी के भीतर परमात्मा व्याप्त है, परमात्मा ने ही सब को बनाया है। जो जैसे २ कर्म करता है वैसा २ वर्ण पाता है, वर्ण कर्म के द्वारा पाता है जन्म के द्वारा नहीं।

(४) हिंसानृतप्रियाः लुब्धाः सर्वकर्मोपजीविनः ।
कृष्णाः शौचपरिभ्रष्टास्ते द्विजाः शूद्रतां गताः ॥
महा० शान्ति० अ० १८९ ॥

निरपराध प्राणियों की हिंसा, झूंठ, लालच, अपवित्रता आदि दुर्गुणों के होने से, हृदय में कपटी होने से, और अपनी जीविका प्राप्ति के लिये खराब से खराब अधर्म का काम भी कर डालने से, अनेकों ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य लोग शूद्र बन गये हैं।

(५) न वै शूद्रो भवेच्छूद्रो ब्राह्मणो ब्राह्मणो नच ॥
महा० शान्ति० अ० १८९ ॥

शूद्रों की सन्तान शूद्र ही हों और ब्राह्मण की सन्तान ब्राह्मण ही हों, यह कोई ज़रूरी बात नहीं है किन्तु बदल भी सकते हैं।

(६) राजन् कुलेन वृत्तेन स्वाध्यायेन श्रुतेन वा ।
ब्राह्मण्यं केन भवति ब्रूहि मे तत्सुनिश्चितम् ॥
शृणु वक्ष्ये कृतं तात न स्वाध्यायो न च श्रुतम् ।
कारणानि द्विजत्वस्य वृत्तमेव तु केवलम् ॥
महा० उद्योग० अ० १८० ॥

हे राजन् ! जन्म, कुल, स्वाध्याय, विद्या और सदाचार में से किससे आदमी ब्राह्मण होता है। उत्तर यह है कि जन्म

से वा कुल से कोई ब्राह्मण नहीं होता और न ही किसी और कारण से होता है, केवल सदाचार से आदमी ब्राह्मण होता है।

(७) शूद्रोप्यागमसंपन्नो द्विजो भवति संस्कृतः ।
ब्राह्मणो वाप्यसद्वृत्तः सर्वसंकरभोजनः ।
स ब्राह्मण्यं समुत्सृज्य शूद्रो भवति तादृशः ॥ *
ब्रह्मपुराण अ० २२३ ॥

विद्या पढ़कर और सदाचारी बनकर शूद्र का पुत्र भी ब्राह्मण होजाता है और इसी प्रकार विद्या और सदाचार छोड़ देने से तथा अभक्ष्य पदार्थों के सेवन करने से ब्राह्मण का पुत्र भी शूद्र होजाता है।

(८) शूद्रोऽपि द्विजवत्सेव्यः स्वयं ब्रह्माब्रवीदिदम् ।
ब्रह्मपुराण अ० २२३ ॥

यह ब्रह्मा ने कहा है कि सदाचारी होने से शूद्र भी ब्राह्मण होता है और ब्राह्मण की तरह पूजनीय होता है।

(९) कर्मणा क्षात्रियत्वं च वैश्यत्वं च स्वकर्मणा ।
दे०भा० स्कं० ९ । अ० २८ ॥

क्षत्रिय और वैश्य भी कर्म से होते हैं, जन्म से नहीं।

(१०) न जात्या ब्राह्मणश्चात्र क्षात्रियो वैश्य एव न ।
न शूद्रो नापि वै म्लेच्छो भेदिताः गुणकर्मभिः ॥
शंकरनीति ।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और म्लेच्छ अपने जन्म से कभी कोई नहीं होता। किन्तु गुणकर्मानुसार लोग ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र व म्लेच्छ हुआ करते हैं।

(११) जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।
वेदाभ्यासाद् भवेद्विप्रो ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः॥

जन्म से सभी शूद्र पैदा होते हैं, परन्तु पीछे से संस्कार, वेदाभ्यास और ब्रह्मज्ञान के द्वारा मनुष्य क्रमशः द्विज, विप्र और ब्राह्मण बनता है।

(१२) धर्मेणाधिगतो यैस्तु वेदः सपरिबृंहणः।
ते शिष्टाः ब्राह्मणाज्ञेयाः श्रुतिप्रत्यक्षहेतवः॥
मनु १२। १०९॥

जिन्होंने धर्माचरणपूर्वक वेद का अध्ययन किया है वे ही सदाचारी पुरुष ब्राह्मण कहाते हैं और कोई अन्य नहीं।

(१३) शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च। मनु १०।६५॥

अच्छे काम करने तथा पढ़ने से शूद्रकुलोत्पन्न पुरुष भी ब्राह्मण हो सकता है और बुरे काम करने तथा विद्या आदि को न पढ़ने से ब्राह्मणकुलोत्पन्न पुरुष भी शूद्र हो जाता है। इसी प्रकार क्षत्रिय और वैश्यों को भी जान लेना। अर्थात् पुरुष

चाहे किसी भी कुल में पैदा हुआ हो वह जिस २ वर्ण के अनुकूल काम करता है उसे उसी वर्ण में गिनना और मानना चाहिये।

(१४) अधर्मचर्यया पूर्वो पूर्वो वर्णो जघन्यं जघन्यं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ ॥ धर्मचर्यया जघन्यो वर्णः पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ ॥

यह महर्षि आपस्तम्ब की आज्ञा है कि अधर्म का आचारण करने से ऊंचे कुल में पैदा होने वाले भी नीचे २ वर्ण के हो जाते हैं। और वे उसी वर्ण में गिने जावें जिसके कि वे योग्य हों। इसी प्रकार उत्तम विद्या और धर्माचरण द्वारा शूद्र आदि कुल में पैदा होने वाले भी ब्राह्मण आदि ऊंचे वर्ण को पा सकते हैं, और अपने योग्य वर्ण ही में गिने जावें। इसप्रकार शास्त्रों में इस के लिए हज़ारों प्रमाण भरे पड़े हैं, जिनसे स्पष्ट विदित होता है कि जो२ विद्यावान् और सदाचारी हों, उन २ मनुष्यों को ब्राह्मण मानना। जो बहादुर योद्धा हों उन २ मनुष्यों को क्षत्रिय समझना। जो किसी तिजारत व व्यापार तथा दुकानदारी आदि द्वारा अपना और अपने देश का धन बढ़ाने में में लगे हों उन २ आदमियों को वैश्य कहना। इसी प्रकार जो लोग अपने शरीर के श्रम द्वारा ही जनता की सेवा करते हों उन्हें शूद्र जानना।

चारों वर्णों को सदाचारी बनना चाहिये। चारों ही परमात्मा

के पुत्र होने के कारण परस्पर सगे भाइयों की तरह प्यार से रहें। कोई किसी को छोटा न समझे। समाज में चारों की अत्यन्त आवश्यकता है। कोई अछूत नहीं है। सभी को छूना चाहिये। किसी से घृणा करना महापाप है। सब सड़कों पर चलने का सब को अधिकार है। सब कुओं परचढ़ने का सब को अधिकार है। सब मन्दिरों में जाने तथा वहां पूजा, पाठ, दर्शन आदि करने का सब को अधिकार है। वेद पढ़ने, यज्ञ, हवन करने का सब को अधिकार है। किसी के छू लेने से रोटी और पानी भ्रष्ट नहीं होजाता। खाना पीना चारों वर्णों का इकट्ठे होना चाहिये। शूद्र के साथ बैठकर खाने व उसके हाथ का भोजन व जल खाने पीने से कोई शूद्र नहीं हो जाता।

अवश्यं भरणीयो हि वर्णानां शूद्र उच्यते ॥

महा० शान्तिपर्व॥

ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों को चाहिये कि शूद्रों (केवल शारीरिक श्रम, कुलीगिरी आदि करनेवालों) के लिये जीविका का उत्तम प्रबन्ध करें। उनको वेतन अच्छा मिलना चाहिये ताकि वे और उनका परिवार आनन्द से खा पी सकें, क्योंकि अन्य लोग तो तरह २ के अन्य काम भी कर सकते हैं पर निर्बुद्धि होने सेजो शूद्र है वह बेचारा और कौन काम करेगा? अतः द्विजोंका परम कर्तव्य है कि अपने सेवकों

की रक्षा और पालन का पूरा प्रबन्ध करें और दलितोद्धार में दत्तचित्त होकर लगें और दलितोद्धारक महर्षि दयानन्द की ऋषिशताब्दी पर यह व्रत लें कि हम कभी भी दलितों से घृणा नहीं करेंगे।

कवि ने क्या ही अच्छा कहा है:—

वही है वीर जो पूरा करे इक़रार दुनियां में।
नहीं तो सैकड़ों होते ज़लीलोख्वार दुनियां में॥
क्या हुआ गर मर गये अपने वतन के वास्ते।
बुलबुलें होतीं फ़िदा अपने चमन के वास्ते॥
घटने न देना मान, करना मोह मत धन धाम का।
मान ही जाता रहा तो धन रहा किस काम का॥

इस वास्ते प्रिय भाइयो और बहिनो! यदि आप प्राचीन आर्य्यगौरव और चक्रवर्ती साम्राज्य पुनः स्थापित करना चाहते हैं तो सारी हिन्दू-जाति को एक संगठन में बांधो, सब कुप्रथाओं को हटाओ और व्यायाम कर ब्रह्मचर्य का पालन कर, सब से प्रेम और भ्रातृभाव से मिलकर, दलितोद्धार में पूर्ण सहायता दो और विघ्नबाधाओं को झेलकर धर्म पर क़ुर्बान होते हुए यह गीत गाओ।

क़टादो राहे हक़ में यार गरदन।
न होजाय कहीं ख़मदार गरदन॥

बेर" और सुदामा के सत्तुओं की तरह अपनी सेवा की तुच्छ भेंट को, जो प्रभुकृपा और महात्माजनों की दया से स्वीकार हुई। हम से जो कुछ बन पड़ा, हमने किया और आगे भी तय्यार रहेंगे। लाहौर और लाहौर से बाहर जहां कहीं हमारी सेवा की आवश्यकता हो हम हाज़िर हैं। क्योंकि हम आपके गोश्त के गोश्त और पोस्त के पोस्त हैं।

आत्मसमर्पण।

हमारे पास विद्या नहीं जो दूसरों को दे सकें, धन नहीं जो रुपया पैसा से सेवा कर सकें और न ही धनपूजा के जाल में फंसना चाहते हैं। क्योंकि निनानवे के फेर में पड़ने से ही जाति की यह दशा हो रही है। परन्तु हम तन और मन दे सकते हैं और हम इन दोनों को अपनी जाति के अर्पण समझते हैं। जाति का अधिकार है कि वह इच्छानुसार इसको वर्ते। प्लेगाक्रान्त इलाके में ही क्या जहां कहीं जिस काम में हिन्दुस्तानी कौम और हिन्दू-जाति को हमारी आवश्यकता होगी, हम खुशी से जायंगे और स्वदेश, जाति और धर्म की रक्षा के लिये अपने प्राण तक न्यौछावर कर देंगे।

हमारा पवित्र रुज़गार।

हम ग़रीब मजदूर दस्तकार हैं। पापी पेट की पूजा के लिये अथवा अपने बड़े भाइयों को सभ्य-समाज में प्रवेश के

योग्य 'जन्टलमैन' बनाने के लिये बूट और जूतियां सीं तथा कपड़ादि बुन कर निर्वाह करते हैं। यही हमारा दोष है। यही हमारा पाप है और हमें इसमें कोई लज्जा नहीं। महात्मा गांधी-जी चर्खे की तार को संजीवनी बूटी मानते हैं किन्तु हमारे समीप सूत के धागे और चमड़े की एक एक सीयून आत्मिक उन्नति, सदाचार और सादगी का उपदेश देती है और स्व-राज्य, स्वदेशोन्नति का सन्देश देती है। यूं तो आजकल चम-ड़ा सर्वप्रधान हो रहा है।

हमारी मांग।

हम अपनी जाति से कुछ नहीं मांगते, हम नहीं कहते कि आप हमें अपने से सौ २ कदम दूर रक्खें या हमें अपनी स-ड़कों पर चलने दें। हम यह भी नहीं कहते कि आप हमारी छाया से न भागें और हमारे छूने से स्नान न करें। हम यह भी नहीं कहते कि आप हमें अपने कूओं से पानी भरने दें या अपने मन्दिरों में देवदर्शन करने दें। आप उन्हें निश्शङ्क अपनी निजू सम्पत्ति समझें और पूज्य देवताओं को अपने नाम पर ही रजिष्टरी कराये रक्खें। हम आप से एक पंक्ति में बैठ कर सहभोज की भी प्रार्थना नहीं करते। हम आप के घर में बैठ कर भोजन करने के भी इच्छुक नहीं और नहीं आपको अपने घर में निमन्त्रण देना चाहते हैं। हम आप से केवल यही चाहते हैं कि आप हमें अपना भाई समझो। हमें कुत्तों

धर्मवीरों की बस है यह निशानी ।
हमेशा रखते हैं तय्यार गरदन ॥
न मुतलक़ खौफ़ वे करते किसी का ।
कटाते हैं सर बाज़ार गरदन ॥
रूह पर कुछ असर होता नहीं है ।
बला से काटले अग़यार गरदन ॥
चढ़े किस्मत अगर क़ातिल हो सर पर ।
करे आज़ादगी इख़्तियार गरदन ॥
वक्त ऐसा न फिर तुझको मिलेगा ।
चूम खंजर के ले रुखसार गरदन ॥
विसाले यार की गर आरज़ू है ।
रखो ए दोस्तो तैयार गरदन ॥
यही हरचन्द अर्ज प्रकाश का है ।
न होवे धर्म से बेज़ार गरदन ॥

दलितों की फ़रियाद ।

प्यारे भाइयो ! कृष्ण भगवान् ने अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर पांव धोने का काम अपने ज़िम्मे लिया था " कबीरा हम नीच भले " इस वचन के अनुसार हमें भी गर्व है कि अपनी प्यारी और लाडली आर्यजाति के सेवकों में हमारी भी गणना है । महावीर हनुमान् आदर्श सेवक थे । हमें इस आदर्श की

प्राप्ति की लालसा है। हम भी " राम के सेवक " कहलाना चाहते हैं, गुरु नानक देव के शब्दों में हम 'परम पुरुष के दास' बनना चाहते हैं।

हम आर्य्यजाति के अंग हैं।

मित्र और शत्रु की पहचान आपत्ति के समय होती है। अतः इन (१६२४ सन् में) प्लेग के दिनों में हम अपने कर्तव्य से विमुख होना पाप समझते थे। एक अङ्ग में दर्द होने से सारे शरीर में बेचैनी पैदा हो जाती है। हमारे बड़े और पूज्य भाई ब्राह्मण, क्षत्रिय, अरोड़ा आदि सब कष्ट में थे। प्लेग के कोप से कुपित थे। ग़रीबों का तो कोई पूछने वाला न था। कई अवस्थाओं में नजदीकी सम्बन्धी भी कर्तव्यहीन हो रहे थे। बापने पुत्र का मुख न देखा। लाडली माता के बेटे ने उसकी खबर न ली। स्त्री ने पति की सेवा से नकार कर दिया। निर्दयी पति अपनी पत्नी के जेवर, कपड़े और चूड़ियां तक उतार कर उसे लावारिस छोड़ भागा जा रहा था और इन घटनाओं का हिन्दू-जातीयता के विरुद्ध बहुत बुरा नैतिक प्रभाव दिखाई दे रहा था। दूसरी जातियों को हमारी हँसी का मौका मिल रहा था। हम इस दृश्य को न सह सके। अतः हम अत्यन्त दयावान् आर्य्य-स्वराज्य-सभा लाहौर के कार्यकर्ताओं के साथ सम्मति करके देवतास्वरूप भाई परमानन्दजी प्रधान हिन्दू-महासभा लाहौर की सेवा में उपस्थित हुए और "भीलनी के

पर हमारी स्त्री, बच्चों के नये कपड़े पहनने पर पाबन्दियां मत लगाओ, दूल्हा को घोड़ी पर चढ़ने और मुकुट या सेहरा बांधने से न रोको, हमें अपने घर में अपने खर्च से घी की पूरी बनाने की आज़ादी दो (कई स्थानों पर तेल की पूरी की भी आज्ञा नहीं है बरातों पर केवल चावल ही परोसे जासकते हैं), अपने सामने ही दरी, टाट अथवा चारपाई पर बैठे देख आंखें लाल कर मत घूरो। हमारी देवियों के पाओं में ज़ेवर पहनने पर क्रोधाग्नि में मत जलो। घुटनों से नीचे हमारे धोती या घगरी बांधने पर दण्डों से हमारा सन्मान न करो। इत्यादि संक्षेप से यह हमारी दुःखभरी कथा है। यदि इसे ध्यान दोगे तो अच्छा है वरना आर्य्यावर्त्त और आर्य्यावर्त्त से बाहर विदेशी शासकों और अन्य जातियों के हाथों तुम्हें जो लेने के देने पड़ रहे हैं उसको शान्ति और सन्तोष से सहन करो।

हमारी निश्चल भक्ति।

इतना बुरा व्यवहार, अत्याचार होने पर भी हम कभी आप का साथ न छोड़ेंगे और कभी जातिद्रोह का पाप न करेंगे। आप की चोटी और यज्ञोपवीत की, आप के धन दौलत की, आप की बहू बेटियों की रक्षा के लिये हम अपना सब कुछ स्वाहा कर देंगे। आप का पसीना गिरने पर हम रक्त बहायेंगे। क्योंकि हम ने चिरकाल से योगिराज कृष्ण से निष्काम सेवा का पाठ पढ़ा है। मुक्तिदाता ऋषि दयानन्द का

यही संदेश है। सत्य और अहिंसा के अवतार महात्मा गांधीजी का भी यही उपदेश है। चाहे आप हमें वेदनिन्दक, चोटी काटने वाले, बोके चरसे का तुम्हारे कुओं पर ही प्रयोग करने वाले, गोघातक लोगों से भी नीच समझें, तो भी हम अपनी आर्य्य वैदिक सभ्यता और भारत माता की सेवा को न छोड़ेंगे। क्योंकि आर्य्य-स्वराज्य-सभा लाहौर ने हमें यही शिक्षा दी है कि किसी पर उपकार करके हम हिन्दू-धर्म में नहीं रहते प्रत्युत अपने कल्याण और मुक्ति का साधन समझ कर इस पर डटे हैं। लेकिन यह सोचना आप का काम है कि आपका अद्वैतवाद और सारे भूतों में एक आत्मा का सिद्धान्त आप को क्या सिखाता है।

स्वराज्य और आर्य्यसंगठन।

युधिष्ठिर महाराज ने अपने कुत्ते को छोड़कर अकेले स्वर्ग में जाना स्वीकार न किया। तो आप विश्वास करें कि हमारे बिना आपकी मुक्ति भी असम्भव है। वेदप्रचार, गोरक्षा और स्वराज्य के लिये हम निर्भय स्वराज्य सेना के बलवान् सैनिक बन सकते हैं। और तो और भारतीय देशी रियासतों की दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई दासता की जंजीरें भी हमारी सहायता के बिना नहीं टूट सकतीं। आपने ग़रीब फ़ौज की ताक़त को नहीं समझा, हम सचमुच जाति के मेरुदण्ड (रीढ़ की हड्डी) हैं, जाति के प्राण हैं। हम आपकी बलिष्ठ भुजाएं हैं केवल

और बिल्लियों से हीनतर न जानो। हमें मनुष्य समझें, हमें आर्य्य हिन्दू-समाज के उत्तम अङ्ग समझें। हमारी आन और आत्माभिमान पर आक्रमण न करें। सापों को दूध पिलाने वालो ! हमें प्यासे न मारो। आप फलो फूलो और हमें जीवित रहने दो। हम से प्लेग के कीड़ों का सा व्यवहार न करो, हम चूहे नहीं जो आपके कूओं में बीमारी फैला देंगे।

हमारा मिशन।

हम संसार में मेहनत मज़दूरी और दस्तकारी के विरुद्ध घृणा और द्वेष के भाव को दूर करके उसे सम्मान और श्रेष्ठता पर स्थापित करना चाहते हैं। हम आर्य्य हिन्दू रहकर इज़्ज़त की ज़िन्दगी से जीना चाहते हैं।

हमारी दुःखभरी कथा।

प्रेम के भाइयो ! क्या कोई हमारे रोने को सुनेगा ? क्या हमारे हृदयविदारक क्रन्दन को सुन कर किसी का दिल पसीजेगा ? आओ सुनो हम चाहते हैं कि किसी उच्च वा नीच जाति वाले को बलात्कार से तथा देशनियम से जयदेवा पाउलागन, सलाम या जयराम करने पर बाधित न किया जाय। हम अधिक काल तक पेट के बल नहीं चल सकते, हमें ज़मीन पर नाक रगड़ने पर मजबूर न करो, अगर हमारा दोष चोटी

रखना और गौ की सेवा करना है तो हम एक वार नहीं हज़ार वार इस जुर्म को दुहरायेंगे और किसी दण्डविधि से भयभीत नहीं होंगे।

अपनी दया के लिये जगत्प्रसिद्ध महात्माओ! दण्ड के वल से हमें मुफ्त की वेगार में मत बांधो। भूखे भक्ति नहीं कर सकते। पञ्जाव के कुछ हिस्सों और पञ्जाव से वाहर दूसरे प्रान्तों तथा स्वदेशी रियासतों में हमारे भाइयों को अपना जूठा खाने पर मजबूर न करो। मुरदार का मांस खाने के लिये हमें मत तङ्ग करो। दुर्गन्ध और सड़ान्द पैदा करने वाले मृत पशुओं को तुम्हारे घरों से उठा कर वाहर फैंकना हमारे भाइयों का अवगुण और दुराचार वताते हो हम उसे त्याग देना चाहते हैं। ऐसा करने पर हमारे मार्ग में आपत्तियां मत पैदा करो। हमें मार मार कर गांव से वाहर निकालने की धमकियां न दो।

पैसे के पुजारियो, हिन्दुओ! हमें भूखा मारने की सवीलहें मत निकालो। हम भी तुम्हारे वरावर वन जायेंगे, इस वहम से हमारी उन्नति, सुधार, शिक्षा के रास्ते में रुकावटें न डालो। हमारे भाइयों के गौ, भैंस घर में रख कर दूध पीने पर नाक न चढ़ाओ, कभी भूल कर घोड़े की सवारी करने पर हमें ज़िवह न करो, रेलगाड़ी में हमारे वैठने पर माथे पर तीवड़ियां न चढ़ाओ और दरवाज़े खिड़कियां वन्द न करो। विवाह उत्सव

आपके समझने की आवश्यकता है। आप के मस्तिष्क में विचार-परिवर्तन की आवश्यकता है। विशेषतः पैसे की प्यारी वैश्य-वृत्ति कौम की स्वार्थरक्षा के लिये हमारी शक्ति से परिचित रहने की आवश्यकता है।

विश्वव्यापी जागृति।

अन्त में एक बात समझलो। इस समय संसार में जागृति उत्पन्न हो रही है। जातियां और समाज अपने जीवन के लिये यत्नबद्ध हैं। हम भी उस विश्वव्यापी तरङ्ग के प्रभाव से सुरक्षित नहीं। अब निश्चय से लाख यत्न करने पर भी हम वर्तमान अवस्था में नहीं रह सकते। संसार की ताकतें हमें स्वतः आगे धकेलेंगी। आप तो अब केवल साधनमात्र बन कर मुफ्त में यश लाभ कर अपने बल को बढ़ा सकते हैं। चारों ओर सङ्गठन की पुकार है। सनातनधर्म और आर्य्यसमाज आदि २ साम्प्रदायिक भेदभाव मिट रहे हैं। इण्डियन नेशनल कांग्रेस, हिन्दू-महासभा और आर्य्य-स्वराज्य-सभा ने बिगुल बजा दिया है। वेद, शास्त्र, पुराण और स्मृति की व्यवस्था तुम्हारी पीठ पर है। थोड़ीसी हिम्मत करके बेड़ा पार करलो वरना हमें भी मजबूर होकर आपकी तरह आत्मरक्षा और आत्मीय स्व-राज्य के लिये पृथक् संगठन बनाना पड़ेगा।

प्यारे हिन्दुओ ! इसे पढ़कर आप अब अनुमान लगा सकते हैं कि उन्हें हिन्दू-धर्म पर कितनी श्रद्धा है और सारे भारत

में इन ग़रीबों पर हम क्या २ अत्याचार कर रहे हैं। अब इस फ़रियाद को पढ़कर कौन हिन्दू है जो अपनी सभ्यता और हिन्दू-जाति के लिये इन भारत के सात करोड़ सपूतों के उठान में कमर न कसे। यदि अब न चेते तो दूसरी कौमों के मगर-मच्छ मुंह खोले हुए इनके चारों ओर हड़प करने के लिये घूम रहे हैं। अब विचारो और उठकर भाइयों को जाति के पूरे अधिकार दो और दिलाओ। आर्यस्वराज्य-सभा इनके उद्धार का प्रयत्न कर रही है, उसे सहायता दो।

यह उपरोक्त फरियाद पंजाब के ४३ दलितों के मुखियाओं की ओर से निकली है और यहां आर्य्यस्वराज्य सभा के मुखपत्र "वीरसंदेश" से हमने उद्धृत की है।

इति

ओ३म्

देशभक्त कुंवर चांदकरणजी शारदा की ओजस्वी भाषा में लिखी पुस्तकें "शुद्धि तथा संगठन" "दलितोद्धार" मूल्य) "कालेज होस्टल" मूल्य ।) "असहयोग" मूल्य ।) "माडरेटों की पोल" ।) निम्नलिखित स्थानों से प्राप्त हो सकती हैं:—

१-मंत्री राजपूताना मध्यभारत सभा शारदा-भवन, अजमेर.

२-जयदेव ब्रदर्स कारेली बाग बड़ौदा.

३-महेश बुक डिपो बसंटी बाज़ार, अजमेर.

४-माथुर ट्रेडिंग कम्पनी पुरानीमंडी, अजमेर.

५-आर्य्यसाहित्य मंडल क़ैसरगंज, अजमेर.

ओ३म् असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्माऽमृतं गमय ।

जो न हटा मुख फेर, बढ़ा जीवन भर आगे ।
जिसको साहस हेर, विघ्न, भय संकट भागे ॥
सबल सत्य की हार, अनृत की जीत न होगी ।
ऐसे प्रबल विचार सहित विचरा जो योगी ॥
उस दयानन्द मुनिराज का, प्रकृति पाठ जनता पढ़े ।
प्रभु शंकर आर्य्यसमाज का, वैदिक बल, गौरव बढ़े ॥

महाकवि 'शंकर'

अहिंसा, ज्ञान, सत्य और वेद के प्रचारक—

महर्षि दयानन्दजी के उद्गार ।

"मेरा कोई नवीन मत चलाने का लेशमात्र
भी अभिप्राय नहीं है । परन्तु जो सत्य
है उसे मानना, मनवाना और जो
असत्य है उसे छोड़ना, छुड़वाना
ही अभीष्ट है । वेद सब सत्य
विद्याओं के पुस्तक हैं उन्हीं
के अनुकूल चलने से
कल्याण होगा ।"